हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।

(ईशावास्योपनिषद् : १५)

सत्य (आदित्यमण्डलस्थ ब्रह्म) का मुख ज्योतिर्मय पात्र से ढका हुआ है। हे पूषन्! मुझ सत्यधर्मा को आत्म-साक्षात्कार कराने के लिए तू उस पात्र को हटा दे।

परम तत्त्व के साथ ऐक्य-स्थापन

समस्त सांसारिक पदार्थ नश्वर हैं; परन्तु ईश्वर एक ऐसी निर्विकार सत्ता है जिसका कभी तिरोभाव नहीं होता, क्योंकि वह अनादि तथा अनन्त है। धरती पर व्ययतीत किये जाने वाले जीवन की अनिश्चितताओं के बीच एक तथ्य निश्चित है कि हमारा तिरोभाव होगा। हम इस भूलोक पर स्थायी रूप से निवास करने के लिए नहीं आये हैं। जन्म के पूर्व तथा मृत्यु के पश्चात् भी जो महान् तत्त्व बचा रहता है (अर्थात् जीवन) उसके अन्तर्गत यह सांसारिक जीवन मात्र एक क्षण-भंगुर घटना है। सांसारिक जीवन ईश्वर तथा विराट् चेतना के साथ जीवात्मा के शाश्वत ऐक्य का सचेतन बोध प्राप्त करने का एक महान् अवसर है। व्यवस्थित रूप से साधनाभ्यास करने से इस ऐक्य की उपलब्धि होती है। आप नियमित रूप से ध्यान तथा चिन्तन करें और परम तत्त्व के साथ ऐक्य स्थापित करें।

ह्नह्नस्वामी चिदानन्द

इस पुस्तक के विषय में

शाश्वत सन्देश

इस पुस्तक में परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज द्वारा समय-समय पर साधकों को पत्रों द्वारा दिये गये बहुमूल्य परामर्शों तथा सन्देशों को संकलित किया गया है। इस संकलन में साधना के सभी प्रमुख विचार-बिन्दुओं की विवेचना की गयी हैह्नह्नयथा दिव्य जीवन, जप तथा भगवद्-स्मरण, अध्यात्म-पथ की बाधाएँ, साधना, गृहस्थों के लिए परामर्श। यह पुस्तक मात्र संकलन ही नहीं है, ऐसी व्यावहारिक पथ-प्रदर्शिका भी है जिसकी सहायता से साधक अपने आध्यात्मिक जीवन की सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं।

इस पुस्तक के प्रेरणाप्रद तथा उन्नयनकारी उपदेश मननीय हैं। परम सत्य के शोध में रत साधकों के लिए इनकी उपादेयता असन्दिग्ध है।

पूर्व-अंक से आगे :

नारी

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

मानवीय प्रेम पूर्णत: खोखला है। यह मात्र पाशविक आकर्षण है। यह मात्र वासना है। यह मात्र शारीरिक प्रेम है। यह स्वार्थी प्रेम है। यह सदैव परिवर्तनशील है। यह पूर्णत: पाखण्ड और खेल मात्र है। यदि पति बेरोजगार हो, तो पत्नी उसकी चिन्ता नहीं करती। जब किसी गम्भीर रोग के कारण पत्नी कुरूप हो जाती है, तो पति उसे नापसन्द करने लगता है। प्रिय पुरुष! आप सच्चा और स्थायी प्रेम मात्र ईश्वर और ईश्वर में ही प्राप्त कर सकते हैं। उनका प्रेम कोई परिवर्तन नहीं जानता।

नारी का स्मरण अथवा प्रतिबिम्ब मन को विचलित करता है। वासना बहुत शक्तिशाली है, यह पाँच मृदुल बाणों को साथ लिये आती है, ये हैं : मोहन, स्तम्भन, उन्मादन, शोषण तथा तापन। विवेक, वैराग्य, समर्पण तथा ध्यान इस भयंकर रोग को उखाड़ फेंकेंगे। यदि काम पर विजय प्राप्त कर ली गयी, तो क्रोध और लोभ जो कि इसके सहयोगी अस्त्र हैं, स्वयं ही निष्प्रभावी हो जायेंगे। प्रेम का मूल अस्त्र नारी है। यदि इस पर विजय पा ली गयी, तो इसके अनुगामियों पर सरलता से विजय पायी जा सकेगी। यदि नायक मारा जाये, तो अन्य सैनिकों पर सरलता से विजय पायी जा सकती है। सर्वप्रथम कामवासना पर विजय प्राप्त कीजिए। तत्पश्चात् क्रोध को जो कि इसका अनुगामी मात्र है, वश में करना सरल होगा। सिंह यदि एक बार मनुष्य का रक्त चख लेता है, तो वह बार-बार मनुष्यों की ओर भागता है, वह मनुष्य-भक्षी बन जाता है। इस प्रकार यदि मन एक बार काम-सुख का स्वाद चख लेता है, तो वह हमेशा उसी के पीछे भागता है। निरन्तर विचार तथा ब्रह्म-भावना के द्वारा ही मन कामुक विचारों तथा इसकी प्रवृत्तियों से विमुख हो पाता है। बार-बार यह आत्म-सुझाव दे कर कि काम-सुख झूठा, निरर्थक, भ्रामक तथा दु:खों से परिपूर्ण है, और मन पर बार-बार चोट करके मन को समझायें। मन को आत्मा में जीवन के लाभ, आनन्द, शक्ति तथा ज्ञान को बतायें। उसे यह पूर्णतया समझाने का प्रयत्न करें कि श्रेष्ठ नित्य जीवन अमर आत्मा में है, न कि विषय-सुखों में। जब यह बार-बार इन सुझावों को सुनेगा, तो अपनी पुरानी आदतों को छोड़ देगा।

भगवद्गीता में आप पायेंगेह्नह्न''विनम्रता, निश्छलता, अहिंसा, क्षमा, सदाचार, गुरु-सेवा, पवित्रता, दृढ़ता, आत्म-संयम, इन्द्रिय-विषयों के प्रति वैराग्य, निरभिमानिता, जन्म-मृत्यु, वृद्धावस्था तथा रोग की अवस्था में अन्तर्दृष्टि, अनासक्ति, पुत्र, पत्नी, घर के साथ स्वयं की पहचान की अनुपस्थिति तथा चाही-अनचाही घटनाओं में निरन्तर मन की सम स्थिति, योग के द्वारा मेरे प्रति अविचल भक्ति, बिना किसी विषय के एकान्त स्थान में निवास करना, लोगों की संगति में आनन्द की अनुपस्थिति, आत्मज्ञान में दृढ़ता, अनिवार्य ज्ञान के विषय की समझ यह सभी ज्ञान कहलाता है। इसके विपरीत सब अज्ञान है'' (अध्याय : १३/८-१२)।

''आसुरी मनुष्य न सही शक्ति का ज्ञान रखते हैं, न उनमें सही संयम, न शुद्धता, न सद्व्यवहार और न सत्य

उनमें है। उनका कहना है कि 'यह सम्पूर्ण विश्व सत्य और आधार के बिना है। यह सम्पूर्ण जगत् ईश्वर के बिना मात्र परस्पर संयोग से मात्र वासना से जन्मा है।' इस दृष्टिकोण को पकड़े हुए ये क्षुद्र बुद्धिसम्पन्न भ्रमित और भयंकर कर्म करने वाली आत्माएँ इस संसार के नाश के लिए शत्रु-रूप में आयी हैं। स्वयं को उन असीम विचारों को भेंट करके जिनका अन्त मृत्यु है तथा कामनाओं की सन्तुष्टि को सर्वोपरि रखते हुए वे यही निश्चित मानते हैं कि यही सब-कुछ है और वे आकांक्षाओं के सैकड़ों बन्धनों में बँधे रहते हैं। लोभ और क्रोध के कारण वे अशास्त्रविहित कर्म करके विषय-सुखों के लिए अथाह धन प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहते हैं'' (अध्याय : १६/७-१२)।

विष्णु पुराण में लिखा हैह्नह्न''यदि भ्रमित आत्मा इस शरीर को प्रेम करता है, जो कि मांस, पीब, मल-मूत्र, मांसपेशियों, चर्बी तथा हड्डियों का संग्रह मात्र है, तो वह मात्र नर्क से प्रेम करता है। उसके लिए जिसे स्वयं अपने शरीर की दुर्गन्ध के प्रति अरुचि नहीं है, उसे अलगाव हेतु क्या उदाहरण प्रस्तुत किया जाये?''

वसिष्ठ ऋषि श्री राम से कहते हैंह्नह्न''स्त्री-रूपी कठपुतली जो एक मांस की गुड़िया है, जो मांसपेशियों तथा हड्डियों से निर्मित है, उसकी अनिवार्य प्रकृति क्या है? उसकी आँखों को ध्यान से देखो। उनमें पलकों की पेशियों, रक्त तथा आँसुओं के सिवा है ही क्या? क्या वहाँ कोई वस्तु सुन्दर और आकर्षक है? तब आप उसमें अनुरक्त क्यों हैं? उसका वक्षस्थल जिस पर मोतियों का हार है, उसकी तुलना सुमेरु पर्वत से उतरती हुई गंगा नदी से की जा सकती है। इसी प्रकार एक रमणी के वक्ष भी उस गंगा के समान ही भयंकर और अतिलोलुपता को भस्म करने वाले हैं। जब समय आयेगा, तो श्मशान भूमि (जो कहीं बाहर स्थित हो) में कुत्ते उसे चावल के लड्डू की भाँति खा जायेंगे। स्त्री के घुँघराले केशों को स्पर्श नहीं करना ही अच्छा है, हालांकि ये नेत्रों को लुभावने लगते हैं, किन्तु वास्तव में ये पापों की ज्वाला हैं जो पुरुष को तिनके की भाँति जला डालती है। स्त्री रसीली और सुन्दर दृष्टव्य होती है; किन्तु वास्तव में यह सौन्दर्य से शून्य है। यह अपने आकर्षक रूप के कारण पुरुषों को उनके नाश के लिए प्रलोभित करती है और उन्हें नर्क की अग्नि में दूर तक धकेल देती है। यह चिड़ियों के झुंड अथवा अनुभवहीन पुरुष को फँसाने के लिए कामदेव का जाल है। जन्म-मृत्यु के तालाब की मछलियों रूपी पुरुष जो मन के दलदल में इधर-उधर ढुलक रहे हैं, उन पुरुषों को फँसाने के लिए स्त्रियाँ वह विश्वासघाती चारा हैं, जो अशुद्ध कामनाओं की डोर से बँधा है। स्त्री वह खजाना है जिसमें प्राण-घातक मोती रखे हुए हैं। और यह कष्टों की अनन्त कड़ी है। एक तरफ मांस है, रक्त है और हड्डियाँ हैं, यह स्त्री का रूप है। हे ब्रह्मा! अन्त में सभी विखण्डित हो जायेंगे।

<u>नोट :</u> वासना बड़ी ही शक्तिशाली है, इससे मुक्ति पाना बड़ा ही कठिन है, इसी कारण मैंने इस वासना से मुक्ति पाने के लिए स्त्री का ऐसा काल्पनिक चित्र प्रस्तुत किया है। वास्तव में स्त्रियों का मातृ-शक्ति की भाँति आदर किया जाना चाहिए। नारी जगत् की सृजक, जन्मदात्री तथा पोषक है, इस कारण उनका आदर किया जाना चाहिए। भारतवर्ष में स्त्री के भक्ति रूप से ही धर्म का संरक्षण और पोषण होता है। भक्ति हिन्दू स्त्रियों का मूल गुण है। कामवासना से घृणा करें, स्त्रियों से नहीं।

''जहाँ स्त्रियों का आदर होता है, वहाँ भगवान् प्रसन्न रहते हैं; लेकिन जहाँ उनका आदर नहीं होता वहाँ किसी भी पूजा का कोई फल नहीं प्राप्त होता।''

(अनुवादिका : शिवानन्द राधिका अशोक)

देश-काल में ब्रह्म

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

हमें बताया गया है कि परम सत्ता, मूलभूत दिव्य सत्ता, हमारे विचार, चिन्तन और हमारी भाषा को व्यर्थ कर देती है। यह सर्वातीत है, देश-काल से परे, अव्यक्त है। हम, अपने मन, बुद्धि, अन्तःकरण पर निर्भर रहने वाले, देश-काल की सीमा में आबद्ध चेतना से, कैसे यह आशा कर सकते हैं कि हम कभी इस महान् सत्ता को समझ सकेंगे?

ब्रह्म के अचिन्तनीय और अनिर्वचनीय होने के कारण यह असम्भव प्रतीत होता है। किन्तु इसके साथ ही जो परमात्मा की अनुभूति के सर्वोच्च शिखर को माप चुके हैं, वह जब उस परम चेतना की और चेतनातीतता की निःस्तब्धकारी ऊँचाइयों से नीचे आये, अपरोक्षानुभूति की विस्मयजनक ऊँचाइयों से वापस लौटेह्ह्हतब उन्होंने उस महान् सत्ता के एक अन्य पहलू, एक अन्य पक्ष, एक और ही सत्य का अन्वेषण किया।

यह खोज इतनी महान् है, इतनी विस्मयकारी, हमारे लिए इतनी महत्त्वपूर्ण, आपके, मेरे, हम सबके लिए इतनी अर्थवान् है कि यदि हम इसे समझ सकें, इस सत्य में जी सकें और इस सत्य को अपनी साधना का आधार बना सकें, तो यह हमारे आध्यात्मिक जीवन के स्तर में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला देगी।

और वह दूसरा पक्ष अथवा पहलू जिसकी उन्हें अनुभूति हुई, और जिसने उन्हें आनन्दातिरेक से रोमांचित कर दिया, उसमें उन्होंने हमें भी सहभागी बनाया, यह सत्य है कि वह परमात्मा, वह परम सत्ता, वह ब्रह्म जो सर्वातीत, असीम, अचिन्तनीय, मन-बुद्धि से परे, अनादि, अनन्त, अथाह और अपार है, वह साथ ही सापेक्ष और सीमित आयाम में व्यक्त भी है। अन्यथा हमारे आध्यात्मिक अन्वेषण की कोई सम्भावना न रहती, हमारी आकांक्षा की, गुरु और शिष्य की, साधना की, योग और ध्यान की, अथवा पूर्णता की आत्मानुभूति की सम्भावना न होती। यह सब-कुछ असम्भव होता।

और इन ज्ञानी महापुरुषों ने जो आविष्कार (अनुभव) किया, वह यह था कि यह सर्वातीत सत्ता, देश-काल से परे, अनादि और अनन्त सत्ता, जब देश-काल में व्यक्त होती है तब वह 'आप' हैं। इस पर मनन करें! देश और काल से जो अतीत है, वह ब्रह्म है। वही ब्रह्म जब देश-काल में व्यक्त होता है, तो वह परम ब्रह्म, वह दिव्यता, वह पूर्णता 'आप' हैं।

इसलिए आप जो हैं, वही बनें। आप जो हैं, उसी दिव्यता का प्रकटीकरण करते हुए जीवन जियें। ऐसा जीवन जियें कि अपने जीवन के प्रत्येक दिवस में जो-कुछ भी आप करें, सबमें अपनी दिव्यता बिखरा दें और जब समय आये, तब हँसते हुए जायें। इस पार्थिव देह धारण का जब अन्त कहा जाने वाला समय आये, तब मुस्कराते हुए, नहीं, प्रत्युत हँसते हुए जायें;

क्योंकि आपके लिए इस जाने का कोई अर्थ नहीं है, इसका कोई अर्थ है ही नहीं। अन्त नाम का कुछ नहीं है। आप अनादि और अनन्त हैं।

अत: आप जो हैं, वही रहें। इस महान् तथ्य के प्रति जाग्रत और जागरूक हों कि भगवान्, ब्रह्म, देश और काल में, अपने प्रकटीकृत स्वरूप में आपके अतिरिक्त और कोई नहीं है। आप जो हैं, वही बन कर रहें। इस तथ्य की, अपने प्रति इस सत्य की अभिव्यक्ति अपने जीवन को बना दें। अपने जीवन को उज्ज्वल दिव्यता से भरपूर कर दें! आनन्दपूर्वक जियें! प्रत्येक क्षण, प्रत्येक पल, प्रत्येक श्वास के साथ सर्वत्र, सदैव इस आनन्द और प्रकाश को प्रसारित करें! तदनन्तर उज्ज्वल, आनन्दित, विजयी हो कर जायें! जीवन इसी प्रकार से जीने के लिए है। वास्तव में जीवन यही है। ऐसा ही कहा गया है।

(अनु. श्रीमती सुधा भारद्वाज)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

बालकों के लिए दिव्य जीवन :

विद्यार्थी-जीवन का महत्त्व

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

प्रिय अमृत-पुत्र!

आप मातृभूमि की भावी आशा हैं। आप कल बनने वाले नागरिक हैं। आपको सर्वदा जीवन के लक्ष्य पर विचार करना चाहिए और उसे प्राप्त करने के लिए ही जीवन बनाना चाहिए। जीवन का लक्ष्य है सर्व दु:खों की आत्यन्तिक निवृत्ति अथवा कैवल्य-पद की प्राप्ति या जन्म-मरण से छुटकारा।

सुव्यवस्थित नैतिक जीवन-यापन कीजिए। नैतिक बल आध्यात्मिक उन्नति का पृष्ठवंश है। चारित्र्य-गठन आध्यात्मिक साधना का एक मुख्य अंग है। ब्रह्मचर्य का पालन कीजिए। ब्रह्मचर्य के पालन से अनेक पूर्वकालीन ऋषियों ने अमृतत्व प्राप्त किया था। यह नवीन शक्ति, वीर्य, बल, जीवन में सफलता और जीवन के उपरान्त नित्य-सुख का स्रोत है। वीर्य के नाश से रोग, क्लेश और अकाल-मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं; इसलिए वीर्य-रक्षा के लिए विशेष सावधान रहो।

ब्रह्मचर्य के अभ्यास से अच्छा स्वास्थ्य, आन्तरिक शक्ति, मानसिक शान्ति और दीर्घ जीवन प्राप्त होते हैं। यह मन और स्नायुओं को सबल बनाता है, शारीरिक और मानसिक शक्ति के संचय में सहायता देता है। यह बल और साहस की वृद्धि करता है। इससे जीवन के दैनिक संग्राम में कठिनाइयों का सामना करने के लिए बल प्राप्त होता है । पूर्ण ब्रह्मचारी विश्व पर शासन कर सकता है। वह ज्ञानदेव के समान पंच-तत्त्वों तथा प्रकृति को नियन्त्रित कर सकता है।

वेदों में तथा मन्त्रों की शक्ति में श्रद्धा बढ़ाओ। नित्यप्रति ध्यान का अभ्यास करो। सात्त्विक भोजन करो। पेट को ठूँस-ठूँस कर मत भरो। अपनी भूलों के लिए पश्चात्ताप करो। मुक्त-हृदय से अपनी भूलों को स्वीकार करो। झूठ बोल कर या बहाना बना कर अपनी भूल छिपाने की कभी चेष्टा मत करो। प्रकृति के नियमों का पालन करो। नित्यप्रति खूब शारीरिक व्यायाम करो। अपने कर्तव्यों का पालन यथा-समय करो। सरल जीवन और उन्नत विचारों का विकास करो। वृथा अनुकरण करना छोड़ दो। कुसंगति से जो बुरे संस्कार बन गये हों, उनकी काया-पलट कर दो। उपनिषद्, योगवासिष्ठ, ब्रह्मसूत्र, श्री शंकराचार्य के ग्रन्थ तथा अन्य शास्त्रों का स्वाध्याय करो। इनसे आपको वास्तविक शान्ति और सान्त्वना प्राप्त होगी। कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों ने यह उद्‌गार प्रकट किया हैह्नह्न''जन्म और धर्मानुसार हम ईसाई हैं; किन्तु जिस शान्ति को हमारा मन चाहता है, वह शान्ति उपनिषदों के अध्ययन से ही मिल सकती है।''

सबके साथ मिल कर रहो। सबसे प्रेम करो। अपने को परिस्थितियों के अनुकूल बनाने का प्रयत्न करो और नि:स्वार्थ सेवा का भाव विकसित करो। अथक सेवा के द्वारा सबके हृदय में प्रवेश करो। अद्वैत-प्रतिपादित आत्मा की अभिन्नता के साक्षात्कार का यही उपाय है।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

योग द्वारा स्वास्थ्य :

सर्वांगासन

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

विधि

फर्श पर एक मोटा कम्बल बिछाइए। पैरों को फैला कर पीठ के बल इस प्रकार चित लेट जायें कि एड़ियाँ और घुटने परस्पर मिले हों, हाथ शरीर के पार्श्व में, पास ही रखे हुए हों तथा हथेलियों का रुख फर्श की ओर हो। धीरे-धीरे श्वास लें।

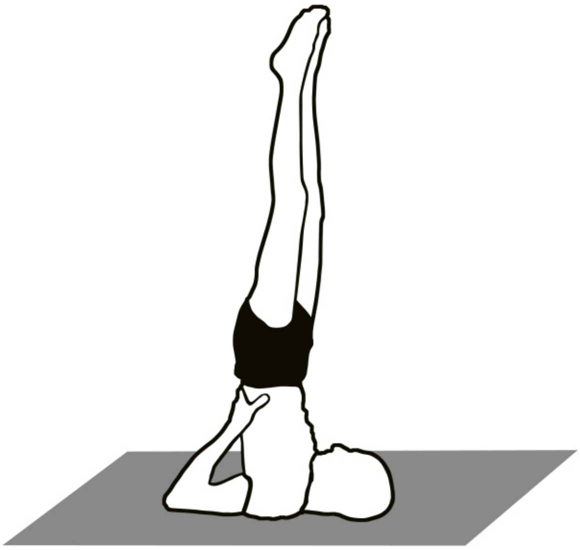

साथ ही बिना घुटनों को मोड़े पैरों को उठायें। धीरे से धड़ को उठायें तथा कोहनियों को मोड़ कर इसको पृष्ठ भाग में (मध्य मेरुदण्ड में) हाथों का सहारा दें। रीढ़ की हड्डी सीधी अर्थात् फर्श पर लम्बवत् रखें। कन्धों का पृष्ठ भाग, ग्रीवा तथा शिर के शीर्ष का पश्च भाग फर्श को स्पर्श करते रहें। चिबुक को वक्ष पर दृढ़तापूर्वक दबाये रखना चाहिए। जब आप मेरुदण्ड को खड़ा कर दें और आसन पर सन्तुलन स्थापित कर लें, तब शनैः-शनैः पैर की उँगलियों को ऊर्ध्वमुखी करते हुए पैरों को फैला दें। पैर, पीठ और मेरुदण्ड को सामान्य श्वास-प्रश्वास के साथ एक लम्बवत् सीधी पंक्ति में, विश्राम की स्थिति में खड़ा रखें।

कण्ठ पर चित्त एकाग्र करें जहाँ स्वच्छ रुधिर अधिक मात्रा में प्रवाहित हो रहा है, जो (कण्ठ की) अवटु और परावटु ग्रन्थियों के अन्तःस्राव को गति प्रदान करता है। यह सर्वाधिक महत्त्व का है।

धीरे-धीरे श्वास निकालें। बिना झटका दिये पैरों को नीचे करें और हाथों की स्थिति छोड़ दें। जब पैरों को अपनी पूर्व-स्थिति में नीचे ला रहे हों, तो आपको भूमि से शिर नहीं उठाना चाहिए। धीमे से नीचे खिसकते हुए चित लेट जायें और कुछ मिनटों तक शवासन में विश्राम करें। इस आसन का समय दैनिक अभ्यास के लिए एक मिनट से तीन मिनट तक भिन्न-भिन्न हो सकता है।

लाभ

इस आसन के अभ्यास के समय शरीर के प्रत्येक अंग का व्यायाम हो जाता है। अन्तःस्रावी प्रणाली से अवटु (कण्ठ की) और परावटु ग्रन्थियों की ओर रुधिर-संचार निर्देशित हो जाता है। ग्रीवा-प्रदेश की स्नायु और कन्धे की मांसपेशियों को लचीलापन प्रदान कर यह उनका प्रसारण कर देता है। यह रोग-ग्रस्त स्फीतशिराओं को सहायता प्रदान करता, पीठ और ग्रीवा की मांसपेशियों को सशक्त बनाता तथा हाथ की मांसपेशियों और शरीर को सम्पूर्णतया आरोग्य प्रदान करता है। यह अपशिष्ट द्रव निर्मित होने को रोकता तथा जीव-विष को हटाता है और शरीर के सम्पूर्ण रुधिर-संचार को नियमित करता है।

सावधानी : शीर्षासन की तरह ही।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

पूर्व-अंक से आगे :

सर्वव्याप्त वैश्वानर

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

यह आनन्द चित् और सत्ह्नह्न'Consciousness and Being' के समान है। जो-कुछ भी निम्न स्तर में था, वह सब इस आनन्द में विलीन हो जाता है। जड़-जगत् में, वनस्पति-जगत् में, पशु-जगत् में और मानव-जगत् में जो भी प्रयोजन हमने देखा, वह इस आनन्द में उपलब्ध है, और यहाँ 'सत्' (existence), 'चित्' (consciousness) और 'आनन्द' (bliss) एक हो जाते हैं, जब कि निम्न स्तरों में वे पृथक् रहते हैं। चट्टानों में केवल सत् है। उनमें चित् और आनन्द का अभाव है। चट्टान अथवा स्थूल शिला सत् में है अर्थात् उसका अस्तित्व तो है; किन्तु उसमें चिन्तन नहीं है, भाव नहीं है। शिलाओं में बोध नहीं है और वे सुखानुभूति करने में भी सक्षम नहीं हैं। किन्तु उच्चतर स्तरों में चिन्तन की एक मन्द प्रक्रिया तब तक चलती है, जब तक यह मानवीय चेतना केपूर्णत्व को नहीं प्राप्त कर लेती। यहाँ मानवीय चेतना में रजस् और तमस् के साथ सत्त्व मिश्रित होता है, जिस कारण से कभी तो हम अत्यन्त क्रियाशील होते हैं, कभी आलस्य युक्त और कभी सत्त्व तत्त्व की अभिव्यक्ति में भिन्नता के कारण हम प्रसन्न होते हैं, यद्यपि ऐसी अवस्था सदैव तो नहीं रहती। किन्तु कभी-कभी की प्रसन्नता से क्या लाभ? इस पर हम निर्भर नहीं रह सकते।

जीवन के हमारे समस्त प्रयास चिरस्थायी सुख प्राप्त करने की ओर उन्मुख रहते हैंह्नह्नवह है आनन्द की प्राप्ति। इसके लिए हमें शुद्ध सत्त्व की प्राप्ति करनी है, शुद्ध सात्त्विकता में पहुँचना है जो रजस् और तमस् से अप्रभावित हो। ये भेद जीव-जगत् में दृष्टिगत होते हैं। हम ये भेद देखते हैं; किन्तु विराट् में ये भेद नहीं हैं।

विराट् के लिए सर्वस्व 'मैं' (अहम्), 'I' है; 'यह', 'वह' कुछ नहीं। **'अहं अस्मि'**ह्नह्न'मैं हूँ'ह्नह्नयह विराट् की जागृति है, जब कि हमारी जागृति हैह्नह्न'' मैं हूँ और मेरे अतिरिक्त तुम भी हो।'' ''मैं हूँ और मेरे बाहर जगत् भी है।'' किन्तु 'विराट्' अथवा 'चित्' यह है कि 'मैं हूँ; किन्तु मेरे बाहर कुछ भी नहीं है।' सम्पूर्ण विश्व 'मैं' है; इसलिए वह वैश्वानर (Cosmic Being) है।

यह वह नर है जो यह अनुभव करता है और जिसमें यह चेतना है कि वह यह सम्पूर्ण विश्व है, वह विश्व-नर है। उपनिषद् के अनुसार वह सप्तांग है। वस्तुत: उसके अनन्त अंग हैं। उसकी सहस्रों भुजाएँ हैं। वह विश्व-मूर्ति है। यह विश्व-पुरुष सहस्रशीर्ष है। और जब कहते हैं कि वह सप्तांग है, तो हम उसके सार्वभौम रूप (व्यक्तित्वह्नह्नPersonality) का मात्र एक चित्र चित्रित करते हैं जैसे एक मनुष्य को उसके शीर्ष, हृदय, भुजा, नासिका, नेत्र, कर्ण, पाद आदि से युक्त हम सात अंगों वाला कहते हैं। किन्तु यदि हम अधिक विस्तृत व्याख्या करते हैं, तो हमें व्यक्तित्व की सूक्ष्मता में प्रवेश करना होगा।

अब यदि विराट् (Cosmic Person) को सार्वभौम जागृति की चेतना (Consciousness) माना जाये, तो हम भी चेतना के विश्लेषण के प्रथम पक्षहहहव्यष्ट्यात्मक अर्थात् जीवत्व की अवस्था में कर्मरत हैं। यहाँ यह उन्नीस मुखों वाला माना जाता है। इसका मुख वह अवयव है, जिसके द्वारा हम वस्तु ग्रहण करते हैं, आहार ग्रहण करते हैं और उसका उचित समीकरण करके मानो निज स्वरूप में परिणत करते हैं। यह मुख का कार्य है।

स्वयं में विषयों के परिग्रहण का माध्यम मुख है। विचार किया जाये, तो नेत्र भी मुख हैं, कर्ण भी मुख हैं; क्योंकि वे विभिन्न प्रक्रियाओं के द्वारा विशेष संस्फुरणों (vibrations) का परिग्रहण और विलयन करते हैं। नेत्र, कर्ण आदि ऐन्द्रिक द्वारों से संस्फुरण हमारे व्यक्तित्व पर आघात करते हैं और ये सब मुख कहे जाते हैं। इस भाव में, प्रत्येक वह वस्तु जो इन्द्रियों द्वारा बोधगम्य है, इस व्यक्तित्व के लिए आहार है। इन्द्रियों के द्वारा हम जो-कुछ भी ग्रहण करते हैं, वह सब आहार है।

''आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः''हहछान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार आहार-शुद्धि से सत्त्व-शुद्धि होती है और सत्त्व से अन्त:करण प्रकाशमान होता है, ज्योतित हो उठता है। इसका यह अभिप्राय कदापि नहीं कि मन और इन्द्रियों से अभद्र चिन्तन करते हुए, बुरा देखते, सुनते रहें और तथाकथित फल और दूध सात्त्विक आहार के रूप में ग्रहण करें।

सात्त्विक आहार पवित्रीकृत स्फुरण है जो इन्द्रियाँ ग्रहण करके अपनी प्रक्रियाओं द्वारा व्यक्तित्व की ओर समय-समय पर पहुँचाती रहती हैं। अत: अवधारणीय है कि इन्द्रियाँ मुख हैं और प्रत्येक इन्द्रिय मुख का कार्य करती है। जाग्रत चेतना के उन्नीस अधिकृत उपकरण हैं जिनके द्वारा यह स्फुरण प्राप्त करके बाह्य जगत् से सम्पर्क स्थापित किया जाता है। ये उन्नीस मुख कौन-से हैं ?

श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा और घ्राणहहये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं और पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैंहहवाक्, पाणि, पाद, उपस्थ और पायु। स्थूल और सूक्ष्म शरीर के माध्यम से चेष्टा में प्रवृत्त करने वाले पाँच प्राण हैं। इनके नाम हैंहहप्राण, अपान, व्यान, उदान और समान। इस प्रकार पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच प्राण मिल कर पन्दरह मुख हुए। ये पन्दरह व्यक्तिगत चेष्टाओं के बाह्य पक्ष हैं; किन्तु हमारी चेष्टाओं का आभ्यन्तर पक्ष भी है, जो चतुर्विध मानस अवयव से संयुक्त है और जिसे हम अन्त:करण-चतुष्टयहहमन, बुद्धि, अहंकार और चित्त कहते हैं।

मन चिन्तन और मनन करता है। बुद्धि तर्क-वितर्क, बोध और निश्चय करती है। अहंकार अहंभाव को दृढ़ करता है और अपने अनुरूप सर्वस्व आत्मसात् करता है। चित्त अनेक क्रियाएँ करने में सक्षम है, जिनमें स्मृति मुख्य लक्षण है अर्थात् पूर्व-संस्कारों का स्मरण और रक्षण अथवा धारणा (retention)। इसे प्राय: हम अवचेतन मन (Sub-conscious psyche) कहते हैं। यह चतुर्विध अन्त:करण-चतुष्टय है। और इन चार सहित पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच प्राणहहजीव के उन्नीस मुख हुए। इन्हीं उन्नीस मुखों से हम बाह्य जगत् के सम्पर्क में आते हैं और इनकी सहायता से ही हम जगत् को स्वयं में विलीन कर लेते हैं। इन उपकरणों के

द्वारा हम व्यक्तिगत रूप से जगत् का व्यवहार चलाते हैं और इन्हीं उपकरणों के माध्यम से हम जगत् की विशेषताएँ और गुण स्वयं में धारण करते हैं।

व्यष्टि और समष्टि के मध्य ये मुख सम्पर्क के साधन हैं। हम कैसे जानते हैं कि हमारे बाहर एक जगत् है? बाह्य जगत् के अनुभव इन्हीं उन्नीस मुखों से लेते हैं। हम जगत् के अस्तित्व के प्रति जागरूक हैं, केवल इतना ही सत्य नहीं है, इस संसार से प्रभावित होते हैं और संसार मात्र बाह्य जगत् का एक बोध ही नहीं है, यह जगत् की सत्ता से प्रभावित होने की प्रक्रिया है।

कहा जाता है कि महापुरुष और जीवन्मुक्त भी संसार को देखते हैं; किन्तु वे संसारी नहीं हैं, क्योंकि जब वे संसार को देखते हैं तो इससे प्रभावित नहीं होते। ये महापुरुष ईश्वर-सृष्टि में होते हैं, जीव-सृष्टि में नहीं। वे किसी अपने संसार का सृजन नहीं करते। विराट्, वैश्वानर अथवा ईश्वर द्वारा बनायी गयी सृष्टि से ही वे सन्तुष्ट रहते हैं। व्यष्टि और समष्टि (individual and cosmic) दोनों के भाव में, जीव और ईश्वर के रूप में यही जाग्रत अवस्था की प्रकृति है। विराट् के रूप में यह 'सप्तांग' है और जीव के रूप में **'एकोनविंशतिमुख:'** है, जो सापेक्ष रूप से क्रमश: भौतिक जगत् और भौतिक शरीर को अनुप्राणित कर रहा है।

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज का यात्रा-कार्यक्रम

क्र.सं.	दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
(१)	१७ से २५ जनवरी २००८ तक	अहमदाबाद (गुजरात)	योग शिविर
(२)	२९ से ३१ जनवरी २००८ तक	तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश)	आन्ध्र प्रदेश दि. जी. सं. सम्मेलन
(३)	१ से ४ फरवरी २००८ तक	लोनावाला (महाराष्ट्र)	मुम्बा सर्कल साधना शिविर
(४)	७ से १३ फरवरी २००८ तक	वडोदरा (गुजरात)	योग शिविर
(५)	१४ से १६ फरवरी २००८ तक	राजकोट (गुजरात)	ध्यान शिविर
(६)	१८ से २४ फरवरी २००८ तक	भावनगर (गुजरात)	योग शिविर
(७)	२६ से २८ फरवरी २००८ तक	नागपुर (महाराष्ट्र)	योग रिट्रीट
(८)	१ से ४ मार्च २००८ तक	कोलकाता (पश्चिम बंगाल)	दि. जी. सं. शाखाओं में भ्रमण

बाल-स्तम्भ

अपनी प्रशंसा

स्वामी रामराज्यम्

विनोबा जी पवनार आश्रम में अपने सहयोगियों के साथ बैठे थे। तभी उन्हें डाकिया ने एक पत्र दिया। पत्र पढ़ कर विनोबा जी गम्भीर हो गये। फिर उन्होंने वहीं बैठे-बैठे उस पत्र को फाड़ दिया।

उनके सहयोगी उन्हें कुतूहल-भरी दृष्टि से देख रहे थे। उनका कुतूहल शान्त करने के लिए विनोबा जी ने कहाह्नह्न''यह पत्र गान्धी जी ने भेजा था।''

गान्धी जी के प्रत्येक पत्र को सहेज-सँभाल कर रखने वाले विनोबा जी का यह व्यवहार उन्हें बहुत आश्चर्यजनक लगा। एक सहयोगी कह ही बैठाह्नह्न''गान्धी जी का पत्र और आपने उसे फाड़ डाला!''

''क्या गान्धी जी ने कोई असत्य बात लिखी थी?'' एक अन्य सहयोगी ने पूछा।

विनोबा जी ने उत्तर दियाह्नह्न''गान्धी जी असत्य कैसे लिख सकते हैं? उन्होंने सत्य ही लिखा था, लेकिन मेरे लिए उनके सत्य को सँभाल कर रखना कठिन था। वह पत्र नहीं, प्रशंसा-पत्र था। गड्ढे में गिरा देने वाले अपनी प्रशंसा के शब्दों को सँभाल कर रखूँ क्या?''

बच्चो, अपनी प्रशंसा अपने को दोषों के गड्ढे में गिराती है। अपनी प्रशंसा सुन-सुन कर अपने दोषों पर से दृष्टि हट जाती है और वे दूर नहीं हो पाते। अपनी प्रशंसा उतनी ही त्याज्य है, जितनी अपनी विष्ठा या वमन।

सूचना

कर्नाटक प्रान्तीय दिव्य जीवन संघ सम्मेलन

दिव्य जीवन संघ की कर्नाटक राज्य की समस्त शाखाओं का सम्मेलन २८ दिसम्बर २००७ से ३० दिसम्बर २००७ तक श्री कुचलाम्बाल कल्याण महल, ब्लाक II, जयनगर, बेंगुलूरुह्नह्न५६००११ में हो रही है। इसमें भाग लेने का प्रतिनिधि शुल्क (भोजन सहित) ५०० रुपये है और आवास हेतु अतिरिक्त शुल्क ५०० रुपये है। अधिक जानकारी के लिए श्री एम. सतीश, सचिव, कर्नाटक राज्य दिव्य जीवन संघ समिति, ७१ चिक बाजार रोड, स्वामी शिवानन्दपुरम् (टास्कर टाउन), बेंगुलूरुह्नह्न५६००५२, कर्नाटक से सम्पर्क करें।

मो. नं. ०९४४८३ ८५५९२

ई मेल : dls.karnataka@rediffmail.com/dilasa2001@yahoo.co.in

सभी भक्तों से इसमें सम्मिलित होने की प्रार्थना है। **द डिवायिन लाईफ सोसायटी**

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' में सेवा-शुश्रुषा

लक्ष्मणझूला के समीप तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' द्वारा दिव्य जीवन संघ मुख्यालय सतत, निज विनम्र सेवा समर्पित कर रहा है। शारीरिक, मानसिक व सांसर्गिक व्याधियों से ग्रस्त एवं परिचित तथा सम्बन्धियों से बिछड़े निराश्रित जनों को घर-जैसी सुविधा देने वाला 'शिवानन्द होम' एक चिकित्सा-केन्द्र है।

एक परित्यक्त और निरवलम्ब कोने में उस निःसहाय युवती का पता लगा। बिना कम्बल किन्तु आवश्यक सुरक्षा के हेतु हाथ में केवल एक लकड़ी सहित, मैले कपड़ों की एक गठरी के नीचे वह लेटी हुई थी। आँखें सम्पूर्ण खुलीं, वस्त्र फटे-पुराने, उलझे हुए अस्त-व्यस्त केश तथा निर्बल, कुपोषित शरीरह्नह्नयह उसकी दशा थी। वह निःशब्द थी, किन्तु उसकी कठोर, घृणित मुखमुद्रा में चिन्ता सरलता से पढ़ी जाती थी। दो वर्षों से भी अधिक पूर्व इस स्त्री-मरीज को 'शिवानन्द होम' में भर्ती कराया गया था। 'होम' में उसके अत्यधिक रक्तहीनता, जंतु-बाधा और मानसिक आघात के इलाज किये गये। कई वर्षों में, धीरे-धीरे स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त करते ज्ञात हुआ कि वह एक शिक्षित युवती थी। स्वास्थ्य-लाभ की प्रक्रिया में उसने सुन्दर चित्र बनाना, हिन्दी और अँगरेजी में लिखना, सिलाई-काम, रोटियाँ बनाना एवं घर का अन्य काम-काज करना प्रारम्भ किया था। देवी माता की कृपा से उसका सम्भ्रान्त और विक्षिप्त मन शान्त हुआ तथा वह उसकी चार सन्तानों के, पति के, उसके गाँव-जिला-राज्य के नाम याद कर सकी। इसके अनुसरण में पूछताछ की लम्बी प्रक्रिया चली और...मानो या न मानो, नवरात्रि-पूजा के प्रथम दिन उसके पति उसे घर वापस ले जाने के लिए आ पहुँचे। यह अत्यन्त हृदयस्पर्शी सत्यकथा हैह्नह्नविशेषतः यह जान कर कि उनका पता बिहार का है, छह वर्षों से भी अधिक पूर्व उसने विक्षिप्त मनःस्थिति में घर छोड़ा था एवं इस समयावधि में उसके पति ने पुनर्विवाह किया।

इन सब प्रतीयमान बाधाओं और विघ्नों के बावजूद पति ने उसे घर लौटने की विनती की। उसकी द्वितीय पत्नी ने न तो केवल मात्र इसका अनुमोदन किया, किन्तु पति के बालकों की माता को घर पुनः लाने के और परिवार में उसका स्थान पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए पति को प्रेरित किया।

नमो नमो दुर्गे सुखकरणी,
नमो नमो अम्बे दुःखहरणी।
(दुर्गा चालीसा)

(हे सुखकर्त्री दुर्गे, तुझे मनन है,
हे दुःखहर्त्री अम्बे, तुझे मनन है।)

यह आशा की, कदापि न हारने की, प्रेम और साहस, उत्साह और बलिदान की और इस माता के हृदय में स्थित देवी की विशुद्ध, यथार्थ पूजा कीह्नह्नएक सत्य जीवन-कथा है। इस माता ने निज मार्ग, मनःशान्ति, ऐहिक सम्पत्ति खो दिये थे, किन्तु अपनी श्रद्धा कभी नहीं गँवायी और अन्त में, पूर्व सम्पत्ति से भी अधिक की प्राप्ति की। वह किसी भी परिस्थिति में से गुजर चुकी हो इसका और उसका परित्याग करने का विचार न कर एक निष्ठावान् पति के समान, उसने उसकी पत्नी का सम्मानपूर्वक स्वागत किया। जरूरी प्रबन्धकीय और पुलिस-ऑफिस की आवश्यक कार्यवाही पूर्ण करके वे स्वगृह पहुँचे एवं कुछ दिनों के बाद उनकी सुरक्षित वापसी का

अनुमोदन करता हुआ एक टेलीफोन-कॉल आया। **नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।** उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार।

''शरण में आये हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सबकी पीड़ा दूर करने वाली नारायण देवी! तुम्हें नमस्कार है।'' (देवीमाहात्म्यम्)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें!रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

आश्रम के मुख्यालय में निःशुल्क नेत्रयज्ञ

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के समय से ले कर अद्य तक दिव्य जीवन संघ मुख्यालय में प्रतिवर्ष निःशुल्क नेत्रयज्ञ आयोजित होता है। दिनांक २४ अक्तूबर से दिनांक २ नवम्बर २००७ पर्यन्त, पूर्व वर्षों के समान, लोगों को दृष्टि-दान देने की निष्काम सेवा, आदरणीय श्री स्वामी याज्ञवल्क्यानन्द जी महाराज (डा. शिवानन्द अध्वर्यु जी) की पावन स्मृति में, शिवानन्द मिशन, वीरनगर द्वारा आयोजित तथा परिचालित हुई।

राजकोट और वीरनगर शाखाओं के डाक्टरों और स्वयंसेवकों ने आस-पास के पहाड़ी और समतल विस्तारों के ग्रामों की ओर, दिनांक २४ से दिनांक २८ नवम्बर पर्यन्त परीक्षण कैम्पों के परिचालन के लिए प्रस्थान किया। दिनांक २९ अक्तूबर को शिवानन्दनगर में स्थित शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल में परीक्षण कैम्प परिचालित किया गया और वहाँ मरीजों की अन्तिम चिकित्सिकीय जाँच की गयी तथा उन्हें मोतियाबिन्दु की शल्यक्रिया के लिए भर्ती किये गये।

दिनांक २९ अक्तूबर को परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, महासचिव, दिव्य जीवन संघ ने सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पूजा और प्रार्थना से नेत्रयज्ञ का उद्घाटन किया। दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने कैम्प की सफलता के हेतु आशीर्वाद प्रेषित किये थे।

उद्घाटन पश्चात् तूर्त मरीजों के परीक्षण प्रारम्भ हुए तथा १२८९ मरीजों की जाँच हुई, एवं उनमें से ३१८ मरीजों को शल्यक्रिया के लिए पसन्द किये गये। इन मरीजों के साथ उपस्थित व्यक्तियों के साथ उन्हें ऑडिटोरियम में आवास दिया गया। दिनांक ३० नवम्बर को प्रातःकाल से शल्यक्रिया आरम्भित हुई। सौराष्ट्र के सेन्ट्रल अस्पतालह्नह्नवीरनगर के प्रतिष्ठित सर्जन और समर्पित चीफ मेडिकल अफसर एवं ऋषिकेश के प्रमुख सर्जन डा. चित्रा सिंग जी ने शल्यक्रियाएँ सम्पन्न की। सब चयनित मरीजों की शल्यक्रियाओं की पूर्ति के लिए दिनांक ३१ नवम्बर को कुछ घण्टों तक शल्य-क्रिया जारी रखनी पड़ी।

आश्रम ने सब नेत्र-मरीजों को और उनके साथ उपस्थित लोगों की भी भोजन और आवास की पूर्ति की। इस नेत्रयज्ञ के आयोजन में प्राणरूप श्री हरिवदन अन्ताणी और जगदीशभाईह्नह्नराजकोट और वीरनगर, दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के १७ समर्पित स्वयंसेवकोंह्नह्नने आवश्यक व्यवस्था की और कैम्प के प्रथम दिन से ले कर अन्तिम दिन, मरीजों के स्वगृह प्रति प्रयाण तक कैम्प सुन्दर रूप से परिचालित किया। आश्रम-अस्पताल के परीक्षण की समयावधि में तथा शल्य क्रियाओं के दिनों में, योग-वेदान्त आरण्य एकेडेमी और शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल के स्टाफ ने उनकी निष्काम सेवाएँ दीं, जिनके फलःस्वरूप यह दृष्टि-दान-यज्ञ अति सफल रहा। दिनांक ३ नवम्बर को सब मरीजों को औषधियों की कीट-बैग दी गयीं तथा उन्हें मुक्त कर दिया गया।

दिव्य जीवन संघ और आश्रम की ओर से महासचिव श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज शिवानन्द मिशन, वीरनगर के सब नेत्र-सर्जनों के और उनके सहायकों, स्वयंसेवकों के प्रति तथा उन सब लोगों के प्रति जिन्होंने शत-शत निर्धन और जरूरतमन्द मरीजों को दृष्टि का पुनर्दान देने में निज प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष समर्पित सेवाएँ प्रदान कीं, सन्तोष और प्रशंसा की अभिव्यक्ति की।

५७ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का समापन समारोह

५७ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का समापन समारोह दिनांक ३१ अक्तूबर २००७ को अकादमी के लेक्चर-हाल में आयोजित हुआ था। प्रारम्भिक प्रार्थना के पश्चात् अकादमी के कुलसचिव प्रोफेसर वेदप्रकाश ग्रोवर जी ने, उस सुअवसर में उपस्थित सबका स्वागत किया। आदरणीय श्री स्वामी शिवभक्तानन्द जी महाराज ने कोर्स का अहवाल पढ़ा। तत्पश्चात् छात्रों में से कुछेक ने कोर्स के विषयक उन पर पड़ा प्रभाव अभिव्यक्त किया और कहा कि उससे वे लाभान्वित हुए हैं तथा वह कोर्स उनकी जीवन-पद्धति में परिवर्तन लाया है। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने कार्यक्रम की शोभा में अभिवृद्धि की एवं छात्रों को प्रमाण-पत्र तथा ज्ञान-प्रसाद वितरित करके प्रभागीय सदस्यों का भी सन्मान किया।

समापन-सम्बोधन में स्वामी जी महाराज ने कोर्स की सफल पूर्ति से निज सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा कि भगवत्कृपा से ही छात्र-गण आये तथा इस पवित्र भूमि में लगभग दो माह वास कर आध्यात्मिक शिक्षा-प्राप्ति के साथ-साथ योगासन और प्राणायाम की प्रायोगिक शिक्षा भी ली। उन्हें आश्रम के अस्पताल द्वारा आयोजित निःशुल्क नेत्र-यज्ञ में सेवा अर्पित करने का सुन्दर अवसर भी मिला। पूज्य गुरुदेव इस प्रकार की कल्याणकारी सेवा को भगवत्पूजा मानते हुए, उसकी सम्पन्नता सहर्ष करते थे। स्वामी जी महाराज ने इसका भी निर्देश किया कि महान् विभूतियाँ उनके सूक्ष्म शरीर तथा सूक्ष्म उपस्थिति से हमारा अभ्युदय करते हैं और सब ज्ञान प्रदान करते हैं। वक्तव्य के समापन में पूज्य स्वामी जी ने छात्र इस ज्ञान-प्राप्ति को आचरित करें, यह कह कर उन पर पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की।

प्रोफेसर वेदप्रकाश ग्रोवर जी ने विद्यार्थियों को इस बात का स्मरण कराया कि वे अपने गृह पहुँचने पर स्व-साधना आचरित करने की दैनन्दिनी तैयार करें। उस आध्यात्मिक दैनन्दिनी का और स्व-सुधार रजिस्टर का निर्वाह करें। आध्यात्मिक पथ पर प्रगति के हेतु सदैव जागृत रह कर पूज्य गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज के प्रतिपादन अनुसार उनकी सब गतिविधियों का आध्यात्मीकरण करें। प्रोफेसर ग्रोवर जी ने इस समापन समारोह में भाग लेने वाले सब स्वामी जी, प्रभागीय सदस्य, अतिथि-गण, अभ्यागतों के आभार माने। कार्यक्रम की पूर्णाहुति सरस्वती-पूजा, प्रसाद-वितरण के साथ, लगभग १०.४५ को सम्पन्न हुई।

मुख्यालय में श्री लक्ष्मी-पूजा तथा गो-पूजा के पर्वोत्सव

भारतीय संस्कृति के अनेक विशिष्ट अभिलक्षणों में श्री लक्ष्मी-पूजा तथा गो-पूजा महत्त्वपूर्ण हैं।

श्री लक्ष्मी-पूजा यह सम्पन्नता और समृद्धि की अधीश्वरी-देवी तथा श्रीमन् नारायण भगवान् की अर्धांगिनी, शक्ति-स्वरूपा देवी माता की आराधना है। देवी माता लक्ष्मी, नारायण भगवान् से अविभक्त होने से, उभय दिव्य नामों को संयुक्त करके कभी-कभी हम 'लक्ष्मीनारायण' नाम से उनका स्मरण करते हैं। प्रकाश भी लक्ष्मी का द्योतक है। दीपावली की पर्वावधि में हम लक्ष्मी-पूजा करते हैं। वणिक्-व्यापारी वर्ग लक्ष्मी माता के सम्मुख धनराशि रख कर, धन की प्रत्यक्ष पूजा करते हैं।

प्रत्येक के लिए देश में यह आनन्दमय अवसर है। यही समयावधि है जब सम्पूर्ण भारतवर्ष में हर जगह लोग उनके गृह, समाज, राष्ट्र और व्यक्तिगत जीवन में समृद्धि और सम्पन्नता रूप से देवी माता के आगमन से उल्लासमय होते हैं। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि यह अवसर हर प्रकार के सौभाग्य और कल्याण का आविष्कार हो कर ऐश्वर्ययुक्त समृद्धि की और देवी-आराधना है।

आश्रम के मुख्यालय में दिनांक ९ नवम्बर के रात्रि-सत्संग में देवी माता लक्ष्मी की पूजा सम्पन्न हुई। आश्रम के परिसर में तथा उच्च वेदी पर सुशोभित लक्ष्मी माता के चित्र के सम्मुख जगमगाते दीप सुसज्जित रखे गये थे।

द्वितीय दिन, दिनांक १० नवम्बर को देवी माता लक्ष्मी के विशिष्ट दृश्य आविष्कार के रूप में और सब वैभवदायी महान् माता के रूप में, मुख्यालय के आश्रम के श्री विश्वनाथ गोशाला की गौ-माताओं की सामूहिक पूजा की गयी। सर्वव्यापक वैश्विक लक्ष्मी माता की भक्तिपूर्ण प्रार्थना की गयी।

देवी माता महालक्ष्मी जी के प्रत्येक पर आशीर्वाद हों!

श्री स्कन्द-षष्ठी का पावन उत्सव

आश्रम के मुख्यालय में दिनांक ११ नवम्बर से दिनांक १६ नवम्बर पर्यन्त हमारे आश्रम के भजन-हाल में स्कन्द भगवान् की आराधना सम्पन्न हुई।

श्री स्कन्द भगवान् ब्रह्मा जी, विष्णु और महादेव की दिव्य त्रिमूर्ति में से भगवान् शिव जी के द्वितीय पुत्र हैं। श्री स्कन्द-षष्ठी का पर्वोत्सव देवसैन्य के सेनापति श्री स्कन्द के दानवीय बल पर विजय-प्राप्ति के लिए, उन्हें भव्य सम्मान अर्पित करने के लिए प्रति वर्ष मनाया जाता है।

प्रथम दिन से प्रारम्भ करके षष्ठी को समाप्त होने वाली यह छह दिनों की आराधना है। आश्रम के भजन-हाल में स्थित छोटे मन्दिर में यह आराधना सम्पन्न होती है। प्रारम्भिक प्रार्थना, कीर्तन, भजन, सुप्रसिद्ध सन्त अरुणागिरिनाथार रचित विशिष्ट धर्मग्रन्थों में से कृतियों के सस्वर पाठ किये गये।

प्रतिदिन की पूजा के अन्तर्गत अभिषेक (भगवान् का धर्मविधि अनुसार स्नान), भगवान् के प्रत्येक दिव्य नाम युक्त अर्चना (पुष्पार्पण), आरती इत्यादि समाविष्ट थे। दक्षिण भारत में लोग इस पावन अवसर को भव्य रूप से मनाते हैं।

आराधना के अन्तिम दिन, षष्ठी को, ८ से १० वर्ष की वयमर्यादायुक्त लड़कों में भगवान् का दर्शन करते हुए उनको पूजा, भोजन-प्रसाद और उपहार अर्पित किये गये।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ने दिव्य जीवन संघ की कुछेक शाखाओं एवं अन्य आध्यात्मिक संस्थाओं की प्रार्थना पर अक्तूबर-नवम्बर २००७ में उड़ीसा राज्य की सांस्कृतिक यात्रा सम्पन्न की।

स्वामी जी ने दिनांक १७ से दिनांक १९ अक्तूबर पर्यन्त पुरी (उड़ीसा) के भागवत आश्रम के परम पूज्य बाबा जी चैतन्य चरण दास महाराज के ७५ वें जन्मदिन के अमृत-महोत्सव के उपलक्ष्य में पुरी में आयोजित 'श्रीमद्भागवत धर्म सम्मेलनी' में निज उपस्थिति दी। बाबा जी महाराज अनेकानेक वर्षों से दिव्य जीवन संघ के साथ अत्यन्त निकटता से सम्बद्ध हैं। वर्ष १९६२ से वे उड़ीसा की दिव्य जीवन संघ की अनेक शाखाओं के आमन्त्रण पर भागवत पर प्रवचन तथा भागवत-सप्ताह सम्पन्न कर रहे हैं। उन्हें वर्ष १९६२ में उड़ीसा में भागवत-प्रचार करने के हेतु परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के विशेष आशीर्वाद मिले एवं उस अवधि से वे उसकी सम्पन्नता कर रहे हैं। बाबा जी महाराज उड़ीसा में तथा बाहर भी हमारे दिव्य जीवन संघ द्वारा आयोजित बहुत परिषदों में निज उपस्थिति दे रहे हैं। इस भागवत सम्मेलन में दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के बहुसंख्य भक्तों ने भी भाग लिया। स्वामी जी ने तीन दिवसीय परिषद् में सब दिन उपस्थित रह कर प्रवचन दिये। उनके प्रवचनों में विषय-वैविध्य रहाहृहृउदाहरणार्थ, 'श्रीमद्भागवत में भक्ति-तत्त्व', 'वर्तमान जीवन में भागवत का योगदान', 'भागवतमृहृहृएक वैश्विक धर्मग्रन्थ' आदि। सम्मेलन विशाल था और परिषद् ने भव्य सफलता पायी।

पश्चात् स्वामी जी ने, दिनांक २२ अक्तूबर से दिनांक २४ अक्तूबर की दिनावधि में दिव्य जीवन संघ की खाटिगुडा

शाखा, जिला नवरंगपुर द्वारा युवा-वर्ग के लिए आयोजित तीन दिवसीय योग-शिविर में निज उपस्थिति देने के लिए आगे प्रस्थान किया। नवरंगपुर तथा कोरापुट जिलों के ८० कॉलेज-छात्रों ने योग-शिविर में भाग लिया। स्वामी जी ने योग-शिविर के विविध सत्रों में प्रवचन, ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान के पश्चात् दैनिक वक्तव्य तथा पूर्वाह्न और अपराह्न सत्रों में सम्बोधन किये। इस बार भी विषयों की अनेकरूपता थीह्नह्नजैसे कि 'ध्यान', 'सफल जीवन में स्वास्थ्य की भूमिका', 'जीवन-साफल्य में व्यक्तित्व-विकास का महत्त्व', 'कामयाबी तथा सुख के लिए दिव्य जीवन' आदि। प्रतिदिन सायं सार्वजनिक सत्संग आयोजित होता था जिसमें स्वामी जी ने सम्मेलन को सम्बोधित किया और प्रवचन दिये। युवा-शिविर अति सफल रहा और उसके प्रतिभागियों को सदाचारी जीवन जीने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन मिले।

अनगुल की 'स्वामी शिवानन्द कल्याण समिति' ने अनगुल जिले के पोडपाडा में दिनांक २६ से २८ अक्तूबर पर्यन्त तीन दिवसीय बाल-शिविर आयोजित किया। पोडपाडा की ओर प्रयाण करते समय स्वामी जी ने दिव्य जीवन संघ की साउथ बलांडा शाखा से भेंट की तथा शाखा से भेंट के हेतु सन्तों के आवास की सुविधा के लिए नूतन निर्मित कक्ष का उद्‌घाटन किया। स्वामी जी ने उस अवसर पर शाखा के एकत्रित विशाल भक्त-समुदाय के साथ सत्संग में निज उपस्थिति दी। दिनांक २६ अक्तूबर को शाखा की ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान-सभा में भक्तों को प्रवचन दिया। पूर्वाह्न में स्वामी जी ने 'स्वामी शिवानन्द कल्याण समिति' की विविध धर्मार्थ और लोकोपकारी गतिविधियों में सहायभूत होने वाले स्थानिक उदार-चरित भक्तों को सन्मानित करने के हेतु शाखा द्वारा आयोजित विशेष सत्संग में भी भाग लिया।

अनगुल जिले के पोडपाडा स्थान में आयोजित बाल-शिविर में कक्षा ६ से ले कर कक्षा १० के लगभग २५० शालेय छात्रों ने भाग लिया। समीपवर्ती स्थानों की कुछेक छात्राएँ भी शिविर में प्रतिभागी हुईं जिनकी उपस्थित कुल संख्या १/३ के आस-पास थी। दिनांक २६, २७ और २८ह्नह्नये सब दिन स्वामी जी ने भिन्न सभाओं में शालेय छात्र-छात्राओं को सम्बोधन किया। उनके प्रवचनों के बहुविध विषयह्नदृष्टान्त के स्वरूप में, 'दैवी सद्‌गुणों तथा प्रार्थना की आवश्यकता', 'आदर्श बालक होने के हेतु आध्यात्मिक जीवन', 'ज्ञान-प्राप्ति में सफलता के मार्ग', 'एकाग्रता और ध्यान के संवर्धन के लाभ और उसकी पद्धति', 'नैतिक शिक्षा और अन्य प्रति उत्तम वर्तन-व्यवहार', 'बड़ों के प्रति व्यक्ति का कर्तव्य', 'पीड़ित तथा अकिंचनों की सेवा', 'प्राणी-मात्र की ओर अहिंसा का आचरण', 'ब्रह्मचर्य के लाभ', 'सद्‌गुणों का उपार्जन और दुर्गुणों का विसर्जन', 'उत्तम स्वास्थ्य के लिए योगासन-प्राणायाम', 'सन्तुलित आहार के लाभ' आदि समाविष्ट थे। प्रतिभागियों ने बहुमुखी कार्यक्रमों में सक्रिय रस लिया और शिविर से अत्यन्त लाभान्वित हुए। समग्र रूप में शिविर भव्यतापूर्ण सफल हुआ और शालेय-छात्रों को बहुत हितकारी रहा।

दिनांक २९ अक्तूबर से ले कर दिनांक १४ नवम्बर पर्यन्त स्वामी जी बालिगुआली (पुरी) के 'चिदानन्द हर्मिटेज शान्ति-आश्रम' में रहे। इस समयावधि में स्वामी जी ने आवश्यकतानुसार आश्रम के महत्त्वपूर्ण कार्यों को सँभाले और अभ्यागतों और भक्तों से मिले।

दिनांक ११ से दिनांक १५ नवम्बर पर्यन्त बालिगुआली 'साधना-गंगा' कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'मासिक साधना-शिविर' आयोजित हुआ। सम्बलपुर, देवगढ़, बरगढ़, बलांगिर, सोनेपुर और बौध जिलों के भक्त-गण साधना-शिविर में संलग्न हुए। स्वामी जी साधना-शिविर में दिनांक ११ से दिनांक १४ नवम्बर पर्यन्त उपस्थित रहे। प्रतिदिन स्वामी जी ने ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान-वर्ग परिचालित करके, ध्यान के पश्चात् प्रवचन दिया। सब दिन, स्वामी जी का वक्तव्य, परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी के 'योग-समन्वय' विषयक हुआ।

दिनांक ३ नवम्बर को स्वामी जी ने कटक जिले के भाटपाडा की मुलाकात ले कर, आदरणीय श्री स्वामी रघुनाथानन्द जी महाराज की षोडशी में भाग लिया।

आदरणीय श्री स्वामी रघुनाथानन्द जी दिव्य जीवन संघ के संन्यासी थे और हाल में ही उनकी महा-समाधि हुई। उस अवसर पर आयोजित सत्संगों में स्वामी जी ने एक प्रवचन भी दिया।

श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा दिनांक ३० अक्तूबर से २ नवम्बर की अवधि में आई आई टी, कानपुर से की हुई भेंट का अहवाल

विवेकानन्द समिति आई आई टी, कानपुर तथा दिव्य जीवन संघ, आई आई टी, कानपुर की शाखा के आमन्त्रणों के अनुसार श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने आई आई टी, कानपुर से भेंट की और दिनांक ३० अक्तूबर से दिनांक १ नवम्बर २००७ की अवधि में शृंखलाबद्ध तीन प्रवचन दिये। उन्होंने दिनांक ३१ अक्तूबर से दिनांक २ नवम्बर २००७ की दिनावधि में प्रभात में तनावमुक्ति और ध्यान विषयक श्रेणीबद्ध क्रियात्मक तीन वर्ग भी परिचालित किये।

सान्ध्य-प्रवचनों के विषय अनुक्रम से, 'उत्कर्ष की खोज में दबाव-घटाव', 'कर्तव्य-कर्म करने में ही तेरा अधिकार है, फलों में कभी नहीं। अतः तू कर्मफल का हेतु भी मत बन और तेरी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो।' (श्रीमद् भगवद्गीता : २/४७) और 'छात्र-जीवन में आध्यात्मिक मूल्य' थे। छात्र-समुदाय के सन्दर्भ और दृष्टिकोण से प्रवचन उचित दृष्टान्तों सहित अत्यन्त सुयोग्य भाषा में किये गये।

स्वामी जी ने विषय-प्रस्तुति के गहन अर्थ सुलभता से प्रकट किये। व्यावहारिक सूचन दिये गये, जिनसे छात्र-गण उनके व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक जीवन में उनके परिपालन से लाभान्वित हो सकें। प्रवचन में उपस्थित सबने ध्यानपूर्वक और ग्रहण-शीलता से उन्हें श्रवण किये।

तनावमुक्ति और ध्यान के प्रभातीय क्रियात्मक और प्रायोगिक वर्ग में जिन्होंने उपस्थिति दी, उनको वे रुचिकर लगे तथा वर्गों के समापन में उन्होंने चुस्ती और स्फूर्ति एवं राहत का अनुभव किया।

उस मुलाकात की अवधि में शाखा-सदस्यों और आई आई टी के छात्रों ने व्यक्तिगत परामर्श के लिए स्वामी जी से भेंट की।

स्वामी जी ने कानपुर शाखा के भक्तों से मुलाकात की तथा श्री वी. डी. तिवारी जी के निवासस्थान पर दिनांक १ नवम्बर को शाखा-सदस्यों के साथ सत्संग किया।

अखण्ड महामन्त्र कीर्तन की ६४ वीं वर्षगाँठ

३ दिसम्बर २००६ को आश्रम मुख्यालय में अखण्ड महामन्त्र कीर्तन की ६४ वीं वर्षगाँठ मनायी गयी। पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने आज ही के दिन, ६४ वर्ष पूर्व, अखिल विश्व की शान्ति और कल्याण के लिए 'महामन्त्र जप' का शुभारम्भ किया था। तब से यह निर्बाध-रूप से चौबीसों घण्टे, बारह मास भजन हॉल में चलता रहता है।

वर्षगाँठ के इस अवसर पर यह सर्वथा उचित था कि आश्रम के सभी अन्तेवासी, साधक और अतिथियों ने सम्मिलित रूप से नगर-संकीर्तन में भाग लिया जो आश्रम की परिक्रमा कर कैलास आश्रम तक गया।

विशेष रूप से निर्मित और फूलों से सुरुचिपूर्वक सज्जित पालकी पर श्री राम तथा श्री कृष्ण के चित्र और सद्गुरुदेव का चित्र रखा गया था।

जुलूस करीब ५.३० सन्ध्या को भजन हॉल में वापस आया। अर्चना और आरती के पश्चात् समारोह की समाप्ति प्रसाद-वितरण से की गयी।

□ □ □

पावन-स्मृति में

कर्नल बी. एल. बिरमानी

कर्नल बी. एल. बिरमानी (उनका संन्यास-नाम श्री स्वामी परमहंसानन्द जी महाराज) की विदाई से हमें अत्यन्त खेद है। श्री स्वामी जी का जन्म १० अक्तूबर १९१९ में वर्तमान में पश्चिम पाकिस्तान में स्थित वडछा स्थान में श्रीमती वीरावली और डा. तहलराम बिरमानी दम्पति के यहाँ हुआ। भारतीय आर्मी में व्यवसाय स्वीकार कर, अनेक वर्षों पर्यन्त उसमें निज सेवाएँ समर्पित कर वे लेफ्टिनेंट कर्नल के पद से निवृत्त हुए। सब उनकी प्रामाणिकता, सच्चाई तथा धर्मपरायणता से परिचित थे।

निवृत्ति के पश्चात् उन्होंने वर्ष १९७० में स्व-पुत्र की साझेदारी में 'शिवानन्द इलेक्ट्रोनिक्स' के नाम से कारोबार का प्रारम्भ किया। प्रत्येक ने कड़ी मेहनत की और उसकी विश्वव्यापक प्रतिष्ठा-प्राप्ति पर्यन्त सख्त परिश्रम का सातत्य रखा। उनके उत्पादन की केवल मात्र भारत में ही माँग नहीं है, किन्तु विदेश के ४० राष्ट्रों में उनकी निकास होती है।

कर्नल बिरमानी जी निर्धनों तथा जरूरतमन्दों की देख-भाल करने में सक्रिय थे तथा उन्होंने योग्य और अधिकारी व्यक्तियों को अन्न-वस्त्र-औषधियाँ तथा सामान्य मदद देने में पहल करके उनका उत्तरदायित्व निभाया। उन्होंने अम्बाला में अपने गाँव में निज भूमि का दान करके एक होमियोपैथिक चिकित्सालय कार्यरत किया।

वर्ष १९६५-६६ में एकदा वे दिव्य जीवन संघ, शिवानन्द आश्रम, पो. आ. शिवानन्दनगर, जिला टिहरी-गढ़वाल के परमाध्यक्ष, परम आदरणीय व परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के सम्पर्क में आये। उस समय से ले कर, ऋषिकेश के, गुरुदेव के शिवानन्द आश्रम से नियमित भेंट करके वे सत्संग में निज उपस्थिति देते थे।

कर्नल बी. एल. बिरमानी तथा उनकी (स्वर्गीय) पत्नी श्रीमती सुशीला बिरमानी जी उत्तम मेजबान-आतिथेय थे। लष्करी व्यवसाय में उनकी जालन्धर, दिल्ली और गोहाटी में पद-नियुक्ति हुई। उन्होंने परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज और उनकी मण्डली को इन सब स्थलों को आमन्त्रित किये और स्थानिक जनता के लाभार्थ सत्संग और सभा-सम्मेलनों का आयोजन किया। समय-समय पर वे शिवानन्द आश्रम से भेंट करते थे और अन्त में पावन श्री विश्वनाथ मन्दिर के सान्निध्य में स्थित, मानसरोवर कुटीर में निवास किया। वे शिवानन्द आश्रम की सब गतिविधियों में रुचिपूर्वक प्रतिभागी हुए। उन्हें सब सन्त-साधु-महात्माओं में महान् आस्था थी।

कर्नल बिरमानी जी और श्रीमती बिरमानी जी, उभय, दिनांक १० अक्तूबर १९९५ में परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज द्वारा संन्यस्ताश्रम में दीक्षित हुए। उनके नामकरण अनुक्रम से श्री स्वामी परमहंसानन्द सरस्वती और श्री स्वामी वेदप्रकाशानन्द सरस्वती थे। संन्यास के पश्चात् उन्होंने अपना सर्वाधिक समय साधना और निष्काम सेवा में व्यतीत किया। उभय शिवभक्त थे। वे निज दैनिक प्रार्थना और ध्यान में नियमित थे। श्री स्वामी परमहंसानन्द जी सदा विशेष ध्यान रखते थे कि सत्संग में उनका स्थान परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की बायीं ओर हो। आरती के पश्चात् वे परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के निकट आ कर, उनके गले लगते थे। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज भी उनकी पीठ थपथपा कर स्नेह का पारस्परिक आदान-प्रदान करते थे।

श्री वेदप्रकाशानन्द जी की विदाई के पश्चात् स्वामी जी का भौतिक शरीर उत्तरोत्तर अशक्त हुआ और उनकी देख-भाल करने के लिए एक परिचारक की उन्हें सतत आवश्यकता थी। अतः उनके पुत्र ने उन्हें महाराष्ट्र राज्य के नासिक शहर के निकट स्थित देवलाली में स्थानान्तरित किये। उन्होंने दिनांक २० सितम्बर २००७ में, रात्रि के ११-४० को अन्तिम श्वास ली।

हम, पूज्य स्वामी परमहंसानन्द जी महाराज की आत्मा की सद्गति और उनके कैवल्य-मोक्ष के लिए श्री श्री विश्वनाथ भगवान् और सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से प्रार्थना करते हैं! हरिः ॐ तत्सत्! **दिव्य जीवन संघ**

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

हमें दिव्य जीवन संघ की शाखाओं द्वारा, उनकी आध्यात्मिक तथा समाज-सेवा की गतिविधियों के अगस्त और सितम्बर २००७ तथा जुलाई २००७ के कुछ विलम्बित प्रतिवेदन प्राप्त हुए हैं। अनेक शाखाओं ने परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के १२० वें जन्मदिन (शिवानन्द जयन्ती) को, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के ९१ वें जन्मदिन (चिदानन्द जयन्ती) को एवं श्रीकृष्ण जयन्ती को आयोजित विशेष कार्यक्रमों के अहवाल प्रेषित किये हैं।

शिवानन्द जयन्ती तथा चिदानन्द जयन्ती के कार्यक्रम

अहिवारा (छत्तीसगढ़) : शिवानन्द जयन्ती के पूर्व दिन को प्रभातफेरी, उसके अनुसरण में १२ घण्टों पर्यन्त '**ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय**' मन्त्र का अखण्ड जप दिनांक ७ सितम्बर को; शिवानन्द जयन्ती को पादुका-पूजन और विशेष सत्संग तथा चिदानन्द जयन्ती को हवन और पूजा इत्यादि सम्पन्न हुए।

अम्बाला (हरियाणा): उभय जयन्तियों को विशेष सत्संग और प्रार्थनाएँ।

बारिपदा (उड़ीसा) : इन उभय दिनों को चिदानन्द सुखधाम आश्रम में ३० बालकों को अन्नदान।

बल्लारि (कर्नाटक) : शिवानन्द जयन्ती को एक आध्यात्मिक प्रवचन सहित विशेष सत्संग और चिदानन्द जयन्ती को पादुका-पूजन।

भंजनगर (उड़ीसा): शिवानन्द जयन्तीह्लह्ल प्रभात में पूजा और 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र की बिल्वपत्र की अर्चना सहित ११ मालाएँ (११ १०८) और सायंकाल में हवन तथा 'गुरुदेव के उपदेश' विषयक वक्तव्य। चिदानन्द जयन्तीह्लह्लप्रभात में पादुका-पूजन और 'ॐ श्री चिदानन्दाय नमः' मन्त्र के साथ बिल्वपत्र की अर्चना युक्त ११ मालाएँ एवं सायंकाल में हवन, पूजा, परम पूज्य स्वामी जी महाराज के जीवन और बोध विषयक प्रवचन तथा आरती और १५० प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन।

भीमकाण्ड (उड़ीसा): शिवानन्द जयन्तीह्लह्ल प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, हवन, प्रवचन तथा नारायण-सेवा। चिदानन्द जयन्तीह्लह्लपादुका-पूजन, १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप और बालकों को मिठाइयों का वितरण।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): चिदानन्द जयन्ती को गुरु-पूजा, आरती, प्रसाद इत्यादि सहित विशेष सत्संग।

बीकानेर (राजस्थान): शिवानन्द जयन्तीह्लह्लप्रभात में 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र, पादुका-पूजा और प्रवचन तथा मध्याह्न को अन्न, मिठाइयों तथा फलों का अन्ध-शाला में वितरण तथा सायंकाल के सत्र में भजन-सन्ध्या। चिदानन्द जयन्तीह्लह्लप्रभात में श्री महा-मृत्युंजयेश्वर मन्दिर में रुद्राभिषेक सहित विशेष पूजा, महामृत्युंजय मन्त्र का जप और यज्ञ तथा भजन-सन्ध्या।

छत्रपुर (उड़ीसा): उभय जयन्तियों को, ब्राह्ममुहूर्त में ४-३० से ६-०० पर्यन्त संकीर्तन यात्रा, पादुका-पूजा, रामायण पारायण, भगवद्गीता स्वाध्याय और भजन-कीर्तन

प्रभात में, मध्याह्न को निराश्रितों को अन्न-दान, वस्त्र-दान और सायं-सत्संग में जीवन-चरित्रों की पुस्तकों से चयनित अंशों का वाचन। तदुपरान्त शिवानन्द जयन्ती को उपस्थित १०९ भक्तों द्वारा लक्षार्चना सहित पूजा।

चेन्नै, वॉषरमेनपेट (तमिल नाडु): शिवानन्द जयन्ती को गुरु-पूजा, मन्त्र जप, एक आध्यात्मिक प्रवचन, भजन, आरती, प्रसाद आदि सहित विशेष उत्सव।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़): शिवानन्द जयन्ती को पादुका-पूजा, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १ घण्टे का संकीर्तन तथा चिदानन्द जयन्ती को 'ॐ नमो भगवते चिदानन्दाय' मन्त्र का १ घण्टे का संकीर्तन।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): शिवानन्द जयन्ती को पादुका-पूजा और १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन तथा चिदानन्द जयन्ती को ६ घण्टों का अखण्ड कीर्तन।

जाजपुर रोड (उड़ीसा): शिवानन्द जयन्ती को ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, ६ घण्टों पर्यन्त, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का अखण्ड जप, पादुका-पूजा, नारायण-सेवा, प्रसाद-सेवन और विशेष सान्ध्य-सत्संग। चिदानन्द जयन्ती को प्रभातीय प्रार्थना-ध्यान सभा, 'ॐ नमो भगवते चिदानन्दाय' तथा महामृत्युंजय मन्त्र के ६ घण्टों पर्यन्त जप, पादुका-पूजा, अकिंचनों को अन्न तथा वस्त्रों का दान, परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के वीडियो के साथ विशेष सान्ध्य-सत्संग और एक भगिनी संस्था को चिकित्सिकीय सेवा के लिए दान इत्यादि।

खुर्दा रोड (उड़ीसा): उभय जयन्तियों को ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, स्वाध्याय, पादुका-पूजा, सत्संग, आरती, नारायण-सेवा तथा प्रसाद-सेवन। अधिक में चिदानन्द जयन्ती को ९२ दीप प्रकटन, फूलों का विशेष सुशोभन तथा आदरणीय श्री स्वामी श्रद्धास्वरूपानन्द जी के द्वारा प्रेरक प्रवचन। तदुपरान्त, आदरणीय स्वामी त्यागस्वरूपानन्द जी और आदरणीय स्वामी सदाशिवानन्द जी और अन्य वक्ताओं द्वारा दैनिक प्रवचनों के साथ, उभय जयन्तियों के मध्य १५ दिनों का ज्ञान-यज्ञ।

लंगथाबाल (मणिपुर): चिदानन्द जयन्ती को परम पूज्य स्वामी जी महाराज के जीवन तथा उपदेश विषयक प्रवचनों सहित विशेष सत्संग और महामृत्युंजय मन्त्र-जप।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): दिनांक ७ सितम्बर को 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप और दिनांक ८ सितम्बर २००७ को ५-३० से ८-०० पर्यन्त प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, हवन, प्रवचन, एक स्थानीय अस्पताल के भर्ती हुए मरीजों को फल-वितरण तथा ६०० भक्तों को प्रसाद-वितरण।

नई दिल्ली, श्री स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोसिएशन : दिनांक ८ सितम्बर को भारतीय विद्या भवन के हाल में, दिव्य जीवन संघ तथा भारतीय विद्या भवन के संयुक्त उपक्रम से श्री स्वामी शिवानन्द मेमोरियल प्रवचन आयोजित हुआ। प्रसिद्ध विद्वान् तथा इण्डियन काउन्सिल कल्चरल रिलेशन्स के परमाध्यक्ष डा. करणसिंह जी ने, 'वर्तमान सन्दर्भ में वेदान्त' विषयक प्रवचन दिया। दिव्य जीवन संघ के प्रतिनिधिरूप में, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने समारोह में निज उपस्थिति दे कर, आशीर्वचन दिये।

परलाखेमुंडी (उड़ीसा): शिवानन्द जयन्ती को प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकाल में विशेष सत्संग तथा चिदानन्द जयन्ती को पूजा-अर्चना के साथ साधना-दिन, कुष्ठरोगियों की एक संस्था में अन्नदान तथा नारायण-सेवा।

रायपुर (छत्तीसगढ़): उभय जयन्तियों को प्रभातफेरी, प्रभातीय प्रार्थना-ध्यान, पादुका-पूजा, संकीर्तन, विशेष सत्संग, कुष्ठरोगियों के अस्पताल के मरीजों के लिए फल-वितरण इत्यादि।

राउरकेला (उड़ीसा): उभय जयन्तियों को अखण्ड जप-यज्ञ, आरोग्य-शिविर, नारायण-सेवा और युवा कार्यक्रम। अधिक में राउरकेला शाखाओं ने संयुक्त रूप में

सितम्बर १५ से २३ दिनांकों पर्यन्त आदरणीय श्रीमती कमल पाणिग्राही माता जी द्वारा नवाह्न रामायण पारायण तथा कथा आयोजित की। सहस्रों भक्तों ने निज उपस्थिति दी।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (उड़ीसा): ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी तथा आदरणीय श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी द्वारा प्रवचन, नारायण-सेवा, प्रसाद-सेवन, भजन-सन्ध्या इत्यादि सहित उभय जयन्तियाँ 'साधना-दिन' के रूप में मनायी गयी। अधिक में शिवानन्द जयन्ती के पूर्व दिन निबन्ध-लेखन तथा वर्क्तृत्व-स्पर्धा आयोजित करके, एक माध्यमिक स्कूल में पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। उभय स्वामीजिओं ने सभा को प्रवचन रूप में सम्बोधित की।

सुनाबेडा (उड़ीसा): शिवानन्द जयन्ती ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, पादुका-पूजा, अभिषेक, हवन, भजन, जप, स्वाध्याय तथा ''साधनाह्नह्नउसके आचरण तथा समस्याएँ'' विषयक समूह गोष्ठी इत्यादि। चिदानन्द जयन्ती : परिवार सहित सब भक्तों के प्रसाद-सेवन के साथ आनन्द और उल्लास का दिन था।

श्री कृष्ण जयन्ती

अहिवारा (छत्तीसगढ़) : 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का ६ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप।

अम्बाला (हरियाणा) : भजन, कीर्तन, जप।

भंजनगर (उड़ीसा): पादुका-पूजा, श्रीकृष्ण पूजा, हवन, श्रीमद्‌भागवत में से पाठ और भजन।

बीकानेर (राजस्थान): विशेष पूजा और सुशोभन, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र-जप, नृत्य सहित भजन-कीर्तन और मध्यरात्रि-आरती।

छत्रपुर (उड़ीसा) : प्रार्थना, पूजा, विशेष सुशोभन, श्रीमद् भागवत में से श्री कृष्ण जन्म विषयक पठन।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़) : ३ घण्टे अखण्ड कीर्तन, श्रीमद् भगवद्‌गीता का सम्पूर्ण पारायण, श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ, विशेष पूजा और अर्चना।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़) : ६ घण्टे अखण्ड संकीर्तन, पूजा-अर्चना।

जाजपुर रोड (उड़ीसा) : प्रभातीय प्रार्थना सभा, दिनभर मन्त्र-जप, रात्रि को पूजा, अर्चना।

कंटाबाँजी (उड़ीसा): पूजा, आरती, प्रसाद-सेवन।

परलाखेमुंडी (उड़ीसा): मध्य रात्रि पर्यन्त भक्तिपूर्ण कार्यक्रम।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़) : प्रात: ६ से ले कर सन्ध्या के ६ पर्यन्त अखण्ड मन्त्र-जप, रात्रि को ८ बजे से ले कर मध्यरात्रि पर्यन्त भजन-कीर्तन।

रायपुर (छत्तीसगढ़): सन्ध्या को ६ बजे से ले कर मध्यरात्रि पर्यन्त अखण्ड मन्त्र-जप।

अन्य गतिविधियाँ

अहिवारा (छत्तीसगढ़) : दैनिक सत्संग, एकादशियों को विशेष पूजा और महामृत्युंजय मन्त्र की माला।

अम्बाला (हरियाणा) : दैनिक सत्संग के अतिरिक्त श्रावण-माहावधि में दैनिक और वर्षभर प्रति सोमवार को 'ॐ नम: शिवाय' मन्त्र जप, प्रति मंगलवार और शनिवार को श्री हनुमान जी के स्तोत्रों के पाठ, प्रति गुरुवार को भजन-कीर्तन, प्रति शुक्रवार को देवी के स्तोत्रों के पाठ और प्रति रविवार को महामृत्युंजय-जप। माह के प्रति द्वितीय रविवार को 'विडियो-सत्संग'ह्नह्न परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द महाराज की ४४ वीं पुण्यतिथि (आराधना-दिन) को विशेष सत्संगह्नह्नप्रति पूर्णिमा को 'ॐ नमो नारायणाय' मन्त्र का अखण्ड जप, दो होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा समाज-सेवा तथा जल-सेवा।

आस्का (उड़ीसा): प्रति गुरुवार को साप्ताहिक पादुका-पूजा और प्रति रविवार को आश्रम में साप्ताहिक

सत्संग। प्रति गुरुवार को भक्तों के निवास-स्थानों पर चल-सत्संग, प्रति माह दिनांक ८ को 'साधना-दिन'। श्री गुरु पूर्णिमा को प्रभात में पादुका-पूजा, सायंकाल में प्रवचन सहित सत्संग। आराधना-दिन को पादुका-पूजा, भगवद् गीता का स्वाध्याय, गुरुदेव के जीवन तथा उपदेश विषयक प्रवचन।

बड़कुँआल (उड़ीसा): प्रभात में दैनिक पूजा के अनुसरण में, स्तोत्र-पाठ और प्रार्थनाएँ, सायंकाल में पूजा, श्री विष्णु सहस्रनाम पारायण, श्रीमद् भागवतम् का स्वाध्याय, भजन-कीर्तन और प्रार्थनाएँ। प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, ३ चल-सत्संग और पादुका-पूजा। शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा और चिदानन्द-दिन को १२ घण्टे अखण्ड कीर्तन, प्रति माह द्वितीय रविवार को भगवद्-गीता पारायण।

श्री गुरु पूर्णिमा और आराधना-दिन के विशेष कार्यक्रमों में जुलाई के दिनांक २९ से अगस्त माह के दिनांक ७ पर्यन्त साधना सप्ताह। आराधना-दिन को ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, स्वाध्याय, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र के साथ सहस्रार्चना सहित पादुका-पूजा, भगवद्गीता पारायण, दो घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन और विशेष सत्संग।

बेंगुलूरु (कर्नाटक): प्रति गुरुवार, शुक्रवार और रविवार को नियमित सत्संगह्नह्नश्री गुरु पूर्णिमा और आराधना-दिन पर्यन्त के दस दिनों पर्यन्त आध्यात्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमह्नह्न३ दिनों को प्रवचन, ३ दिन भक्ति-संगीत, दो बार तथा एकदा सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित आध्यात्मिक प्रवचन। आराधना-दिन को एक सन्त द्वारा आशीर्वचन, हमारे गुरुओं के अवतरणों युक्त एक पुस्तक का विमोचन, साधु-भिक्षा, नारायण-सेवा, भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन और सायंकाल में सांस्कृतिक कार्यक्रम।

बरबिल् (उड़ीसा): प्रति सोमवार को आश्रम में साप्ताहिक सत्संग, प्रति गुरुवार को चल-सत्संगह्नह्नमाह जुलाई के दिनांक ३० से माह अगस्त के दिनांक ५ पर्यन्त वार्षिक साधना-सप्ताह तथा आराधना-दिन को दिनभर आध्यात्मिक कार्यक्रमह्नह्नशिवानन्द चैरिटेबल होमियोपैथिक औषधालय द्वारा माह अगस्त २००७ की अवधि में ४४१ मरीजों के इलाज किये गये।

बारिपदा (उड़ीसा): प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, दिनांक ५ अगस्त और २ सितम्बर को आश्रम-हाल में मासिक साधना-दिन और नियमित रूप से कुष्ठरोगियों की एक संस्था में औषधियों का वितरण।

बल्लारि (कर्नाटक): दैनिक पूजा, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग और पादुका-पूजा।

भंजनगर (उड़ीसा): प्रति रविवार को स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण तथा श्रीमद् भगवद्गीता के २ अध्याय और इतर श्लोकों के पाठ सहित एकादशी सत्संग, प्रति माह संक्रान्ति को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण। श्री गुरु पूर्णिमा को पादुका-पूजन, पाठ, जप, हवन, प्रवचन सहित ३३८ वाँ मासिक साधना-दिन। श्री आराधना-दिन को प्रभात में पादुका-पूजा, हवन और एक आध्यात्मिक प्रवचन।

भिलाई (छत्तीसगढ़): माह के अन्तिम रविवार को मासिक सत्संग, प्रति मंगलवार को श्री हनुमान जी के स्तोत्रों के पाठ और प्रति शुक्रवार को श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्र के पाठ सहित मातृ-सत्संग तथा श्रीमद्भगवद्गीता के सम्पूर्ण पारायण और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पाठ सहित एकादशी की उभय तिथियाँह्नह्नपादुका-पूजा, महामृत्युंजय मन्त्र के जप, भजन-कीर्तन और एक सन्त के प्रवचन सहित आराधना-दिन को विशेष समारोह।

भीमकाण्ड (उड़ीसा) : दैनिक पादुका-पूजा और रविवार को सत्संग।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश) : गुरु-पूजा, गुरुदेव के जीवन और उपदेश विषयक प्रवचन, भजन-कीर्तन, आरती इत्यादि के सहित श्री गुरु पूर्णिमा को विशेष सत्संग। प्रभात में दैनिक पूजा और सायंकाल में भजन-कीर्तन के साथ माह सितम्बर के दिनांक १५ से २४ पर्यन्त श्री गणेशोत्सव की विशेष प्रवृत्ति।

बीकानेर (राजस्थान) : नियमित गतिविधियाँह्लह्ल दैनिक द्विवार पूजाएँ, स्वाध्याय सहित दैनिक २ घण्टों का सत्संग, प्रति माह के प्रथम मंगलवार और अन्तिम शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण सहित मातृ-सत्संग, शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा और चिदानन्द-दिन को महामृत्युंजय मन्त्र की आहुतियों से यज्ञ, अन्धशाला में अन्नदान तथा अन्न, फल, वस्त्र का वितरण अकिंचनों को, दैनिक नि:शुल्क योगासन वर्ग, शिवानन्द लाइब्रेरी और विद्यार्थियों को सहाय।

विशेष कार्यक्रमह्लह्लपावन श्रावण की माहावधि में 'ॐ नम: शिवाय' मन्त्र का दैनिक जप और कीर्तन, श्रीरामचरितमानस का पारायण, प्रदोष-दिन को दूध के सतत अभिषेक युक्त विशेष शिव-पूजा, अमावास्या को विशेष कार्यक्रम। आराधना-दिन को पादुका-पूजा, गुरुदेव के जीवन विषयक प्रवचन और विडियो-दर्शन। श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, उनके जीवन और उपदेश पर प्रवचन। श्री गणेश चतुर्थी और श्री राधा अष्टमी को विशेष कार्यक्रम और पूजा।

छत्रपुर (उड़ीसा) : दैनिक सान्ध्य-सत्संग, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, सितम्बर की माहावधि में ५ चल-सत्संग, संक्रान्ति-दिन को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण। विशेष कार्यक्रम: श्री गणेश चतुर्थी को पूजा और श्री गुरु पूर्णिमा के दिन से आराधना-दिन पर्यन्त दैनिक ध्यान।

चेन्नै, वाषरमेनपेट (तमिल नाडु) : आराधना-दिन तथा शाखा-स्थापना के ३२ वें वार्षिक-दिन के विशेष समारोह में शास्त्र-ग्रन्थों में से पठन, एक आध्यात्मिक प्रवचन, भजन इत्यादि।

चिकिति (उड़ीसा): प्रति गुरुवार को प्रभात में पादुका-पूजन और सायंकाल में सत्संग, श्री गुरु पूर्णिमा-आराधना-दिन के दस दिन के दिनभर के कार्यक्रमों में ब्राह्ममुहूर्तीय जप-ध्यान, गुरु-पूजा, गुरु-गीता और भगवद्-गीता के स्वाध्याय प्रभात में, सायंकाल में ब्रह्मसूत्र और Bliss Divine का स्वाध्याय, भजन-कीर्तन-प्रवचन। दिनांक २२ जुलाई के साधना-दिन को ब्राह्ममुहूर्तीय जप-ध्यान, पादुका-पूजा, श्री हनुमान चालीसा के १०८ आवर्तन और स्वाध्याय सहित विशेष सान्ध्य-सत्संग।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़) : दैनिक नियमित प्रार्थना-ध्यान, योगासन, प्रभात में श्री हनुमान जी के स्तोत्रों के पाठ तथा सायंकाल में ३० मिनट का संकीर्तन और उसके पश्चात् सत्संग।

साप्ताहिक गतिविधियाँह्लह्लप्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, प्रति शनिवार को सुन्दरकाण्ड पारायण और श्री हनुमान चालीसा के पाठ और प्रति रविवार को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र। श्री गुरु पूर्णिमा को पादुका-पूजा और 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन। दिनांक २७ अगस्त को विशेष शिव-पूजा-अभिषेक और १ घण्टे का अखण्ड कीर्तन। श्री गणेश चतुर्थी को विशेष पूजा-अर्चना।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़) : दैनिक गतिविधियाँह्लह्ल त्रिवार पूजा, प्रभातीय प्रार्थना-ध्यान, योगासन-वर्ग, २ घण्टों का सान्ध्य-सत्संग। साप्ताहिक गतिविधियाँह्लह्लप्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, प्रति शनिवार को श्री हनुमान चालीसा और श्री सुन्दकाण्ड के पारायण, प्रति सोमवार को शिव-स्तोत्रों के तथा प्रति शुक्रवार को देवी-स्तोत्रों के पाठ। विशेष कार्यक्रमह्लह्लदिनांक १६ जुलाई को रथ-यात्रा और १२ घण्टे अखण्ड कीर्तन। श्री गुरु पूर्णिमा को 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन जो गुरु-पूर्णिमा के प्रभात को ६ बजे समाप्त हुआ। उसके पश्चात् प्रभातफेरी, व्यास-पूजा, पादुका-पूजा, हवन इत्यादि। दिनांक २७ अगस्त को विशेष शिव-पूजा, अभिषेक, १२ घण्टों का अखण्ड संकीर्तन, हवन। श्री गणेश चतुर्थी को विशेष पूजा।

गुड़गाँव (हरियाणा): नियमित गतिविधियाँह्लह्लप्रति सोमवार को मातृ-सत्संग, प्रति मंगलवार को सुन्दरकाण्ड

पारायण, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, एकादशियों को कथा और हवन, पूर्णिमा को श्री सत्यनारायण कथा, भजन-कीर्तन तथा प्रति माह अन्तिम रविवार को विशाल भण्डारा।

जयपुर (राजस्थान): दैनिक गतिविधियाँह्लह्लप्रभात में भागवत कथा, अपराह्न में शिव-पुराण का स्वाध्याय, सायंकाल में सत्संग। साप्ताहिक गतिविधियाँह्लह्लप्रति रविवार को प्रभातीय सत्संग, प्रति सोमवार को मातृ-सत्संग, प्रति गुरुवार को महामृत्युंजय मन्त्र का डेढ़ घण्टे पर्यन्त सामूहिक जप, प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड और श्री हनुमान-स्तोत्रों के पाठ। मासिक गतिविधियाँह्लह्लशिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजन। समाज-सेवाह्लह्ल स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल औषधालय ने माह अगस्त में १५१९ मरीजों के इलाज किये, दैनिक योगासन वर्ग, स्वामी शिवानन्द पुस्तकालय, २४ निर्धन विधवाओं को प्रति माह रु. १०० की और ८० छात्रों को भी आर्थिक सहाय दी गयी। कुष्ठरोगियों की एक संस्था को कोरा राशन और लगभग ३०० निर्धनों को दैनिक अन्न-वितरण। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल पावन श्रावण माह में दैनिक विशेष पूजा-रुद्र-अभिषेक तथा प्रति सोमवार को सब भक्तों द्वारा अर्चना, दिनांक १८ अगस्त को निर्धनों को वस्त्र-वितरण तथा दिनांक १२ अगस्त को ६० भक्तों द्वारा एक धार्मिक पर्यटन।

जाजपुर रोड (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्लह्ल दैनिक पादुका-पूजा, प्रति गुरुवार को सत्संग, प्रति माह शिवानन्द-दिन को नारायण-सेवा। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल (१) श्री गुरु पूर्णिमा : प्रभातीय प्रार्थना और ध्यान, पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, नारायण-सेवा और विशेष सान्ध्य-सत्संग। (२) रजत-जयन्ती महोत्सव : दिनांक १२ अगस्त को शाखा के २५ वें स्थापना-दिन को प्रभातीय प्रार्थना-ध्यान, योगासन-प्राणायाम-पादुका-पूजा, श्री हनुमान चालीसा और भगवद्गीता के पाठ, महामन्त्र कीर्तन तथा उनकी २५ वर्ष की समर्पित सेवाओं के लिए सचिव और प्रमुख का सम्मान इत्यादि सहित ८ घण्टों के कार्यक्रम। (३) दिनांक ९ सितम्बर को साधना-दिन।

जयपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्लह्लद्विवार पूजा, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, हवन, पूजा, शिवानन्द-दिन को प्रसाद-सेवन। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) दिनांक २० जुलाई को आदरणीय श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द जी द्वारा शाखा की भेंट करने के उपक्रम में उनके प्रवचन युक्त विशेष सत्संग। (२) दिनांक १५ जुलाई को विशेष पूजा, स्वाध्याय, सत्संग आदि सहित भगवान् श्री श्री जगन्नाथ जी का उत्सव। (३) श्री गुरु पूर्णिमा : १० घण्टों का कार्यक्रम जिसमें पादुका-पूजा, शास्त्र-ग्रन्थों में से पठन, हवन, पूजा, स्तोत्र-पाठ तथा ८० भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन। (४) आराधना-दिन : १०० भक्तों की प्रतिभागिता सहित श्री गुरु पूर्णिमा के समान सब कार्यक्रमों की सम्पन्नता।

कक्चिं (मणिपुर) : नियमित गतिविधियाँह्लह्लश्री विश्वनाथ मन्दिर में द्विवार पूजाएँ, ध्यान, योगासन, सान्ध्य-सत्संग। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) भगवान् श्री श्री जगन्नाथ जी की पूजा, प्रवचन तथा महाप्रसाद सेवन दिनांक २४ जुलाई को। (२) श्री गुरु पूर्णिमाह्लह्लदिनांक २९ जुलाई को आदरणीय श्री स्वामी गुरुगोविन्दानन्द जी के प्रवचन युक्त, ६१ वें मणिपुर राज्य के सत्संग में भक्तों की उपस्थिति। दिनांक ३० जुलाई को पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, मन्त्र-जप। अनेक विद्यार्थी कार्यक्रम में शामिल। (३) दिनांक १५ जुलाई को शाखा द्वारा थौबल जिले का सत्संग आयोजित। (४) पूर्ण माह का योग-तालीम शिविर। (५) वृक्षारोपण : ११० केले के वृक्ष, ४६० ओक वृक्ष के पौधे तथा ५०० मलबेरी वृक्ष के पौधे रोपित किये गये।

कानपुर (उत्तर प्रदेश): नियमित गतिविधियाँह्लह्ल दैनिक रामायण कथा, श्री सुन्दरकाण्ड का साप्ताहिक पारायण, उभय एकादशियों को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ, माह के अन्तिम रविवार को मासिक सत्संग तथा निर्धनों को अन्नदान।

कंटाबाँजी (उड़ीसा): प्रति रविवार को श्रीमद् भागवतम्, भगवद्गीता तथा कठोपनिषद् के स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग।

खाटिगुडा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्हप्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, माह के द्वितीय रविवार को मासिक चल-सत्संग। उभय एकादशियों को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण, मासिक साधना-दिन तथा नारायण-सेवा प्रति माह के प्रथम रविवार को। विशेष गतिविधियाँह्ह(१) श्री गुरु पौर्णिमा : प्रात:काल में प्रार्थना-ध्यान, व्यास-पूजा, पादुका-पूजा, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १२ घण्टों का अखण्ड जप। (२) जुलाई ३० से अगस्त ५ पर्यन्त श्रीमद् भागवत पारायण तथा हवन, अन्न-यज्ञ और नारायण-सेवा युक्त समापन के दिन जो कि साधना-दिन के रूप में मनाया गया। (३) आराधना-दिन को विशेष सत्संग।

खुर्दा रोड, जटनी (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्हदैनिक सत्संग तथा प्रति माह चिदानन्द-दिन को १२ घण्टों का अखण्ड मन्त्र-जप। विशेष गतिविधियाँ : (१) श्री गुरु पूर्णिमाह्हब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, व्यास-पूजा, गुरु-पूजा, विडियो कैसेट द्वारा प्रवचन, श्रीमद् भगवद् गीता का स्वाध्याय, प्रसाद-सेवन। (२) आराधना-दिनह्ह ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, पादुका-पूजा, सहस्रार्चना, स्वाध्याय, नारायण-सेवा, प्रसाद-सेवन इत्यादि। (३) प्रति रविवार को शिव-अपराध-क्षमापन-स्तोत्र पर प्रवचन।

नाभा (पंजाब): ध्यान और स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग।

नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश): श्रीमद् भागवत के स्वाध्याय सहित तथा श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र और श्री ललिता अष्टोत्तरशत नाम स्तोत्र के पाठ सहित दैनिक सत्संग। प्रति शुक्रवार को श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ। श्री गुरु पूर्णिमा को विशेष सत्संग, श्री व्यास भगवान् तथा परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के १०८ नामों के श्रद्धा-भक्ति युक्त उच्चारण।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): नियमित गतिविधियाँह्हदैनिक २ घण्टों की ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-स्तोत्र-पाठ सभा; प्रति गुरुवार को ३ घण्टों का साप्ताहिक चल-सत्संग, प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड और श्री हनुमान चालीसा के पाठ सहित तथा उभय एकादशियों को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ और भगवद्गीता पारायण सहित मातृ-सत्संग तथा प्रति माह दिनांक ३ को ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड महामन्त्र कीर्तन। विशेष गतिविधियाँह्ह(१) आराधना-दिन : हवन, भजन-कीर्तन। (२) श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती : 'मानस-गोष्ठी' का ३ घण्टों का कार्यक्रम।

नयागढ़ (उड़ीसा): शाखा की साप्ताहिक नियमित गतिविधियों में प्रति बुधवार को सत्संग, प्रति मंगलवार को मातृ-सत्संग, प्रति सोमवार को गीता-वर्ग तथा प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण। श्री गुरु पूर्णिमा और आराधना-दिन के कार्यक्रम : उभय दिनों को प्रार्थना-ध्यान सभा, योगासन-प्राणायाम, लक्षार्चना सहित पादुका-पूजा, आदरणीय श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द जी द्वारा प्रवचन, स्वाध्याय, नारायण-सेवा और सान्ध्य-सत्संग। साधना-सप्ताह में दैनिक सत्संग। श्री गुरु पूर्णिमा को स्वामी जी ने बाल-विकास केन्द्र का उद्घाटन किया जिसमें ४६ बालक भर्ती हुए। प्रति माह के द्वितीय रविवार को मासिक सभा होगी। आराधना-दिन को, 'स्वामी चिदानन्द सेवा' और 'अन्नदान केन्द्र' निर्धनों को सहाय करने के लिए स्वामी जी द्वारा उद्घाटित हुए।

नई दिल्ली, श्री स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोसिएशन : नियमित गतिविधियाँह्हदैनिक रूप से समूह-प्रार्थना, स्वामी शिवानन्द विद्या-भवन के छात्रों को नैतिक शिक्षा तथा सायंकाल में योगासन-वर्ग। रविवारीय कार्यक्रमों में प्रथम तथा पंचम रविवारों को भगवद्गीता स्वाध्याय, द्वितीय रविवार को भगवद्गीता पारायण, तृतीय रविवार को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण तथा ध्यान, एवं पादुका-पूजा और भजन-कीर्तन चतुर्थ रविवार को।

मासिक गतिविधियाँह्हप्रथम शनिवार को मासिक सुन्दरकाण्ड पारायण तथा प्रति माह दिनांक ५ को बालकों को पौष्टिक आहार तथा दूध का वितरण। श्री गुरु पूर्णिमा को पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन इत्यादि सहित भव्य उत्सव।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा के रविवारीय सत्संगों में, प्रथम रविवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, संकीर्तन और ध्यान द्वितीय रविवार को, श्री गुरुदेव के साहित्य का स्वाध्याय तृतीय रविवार को तथा चतुर्थ रविवार को विशेष आमन्त्रित व्यक्ति द्वारा आध्यात्मिक प्रवचन।

परलाखेमुंडी (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्ह दैनिक पूजा, साप्ताहिक सत्संग, चल-सत्संग। श्री गुरु पूर्णिमा और आराधना-दिनह्ह इन दस दिनावधि में प्रतिदिन विशेष सत्संग। श्री गुरु पूर्णिमा को पादुका-पूजा। आराधना-दिन को पादुका-पूजा तथा कुष्ठरोगियों की एक संस्था में अन्नदान, फल तथा मिठाइयों का वितरण।

रायपुर (छत्तीसगढ़) : नियमित गतिविधियाँह्हप्रति रविवार को सत्संग, प्रति सोमवार को 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का १ घण्टे पर्यन्त अखण्ड कीर्तन तथा उभय एकादशियों को विशेष पूजा और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण। विशेष कार्यक्रमह्हदिनांक २४ अगस्त को विशेष देवी-पूजा, भोग तथा प्रसादम्। श्री गणेश चतुर्थी को विशेष पूजा और संकीर्तन।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (उड़ीसा): प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग।

सालेपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्हदैनिक प्रार्थना-ध्यान, द्विवार पूजाएँ, १ घण्टे पर्यन्त 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का अखण्ड कीर्तन, महामृत्युंजय मन्त्र का एक घण्टे का जप, श्री विष्णु सहस्रनाम तथा श्री हनुमान चालीसा के पाठ, अध्ययन वर्ग तथा सान्ध्य-सत्संग। माह के प्रथम शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड का पारायण, प्रथम रविवार को सम्पूर्ण भगवद्गीता पारायण। शिवानन्द-दिनह्ह पादुका-पूजा, स्तोत्र-पाठ, विशेष सत्संग तथा मासिक साधना-दिन। विशेष गतिविधियाँह्ह(१) आराधना-दिन : 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १ घण्टे तक जप, पादुका-पूजा, आध्यात्मिक प्रवचन सहित सान्ध्य-सत्संग। (२) श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती : श्री सुन्दरकाण्ड का पाठ और श्री हनुमान चालीसा के २५ आवर्तन, प्रवचन सहित सान्ध्य-सत्संग। (३) दिनांक २६ अगस्त को प्रवचन। (४) प्रवचन सहित पूर्णिमा को विशेष सत्संग। (५) होमियोपैथिक औषधालय द्वारा २१७ मरीजों के उपचार।

साउथ बलाण्डा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ ह्हप्रति शुक्रवार को सत्संग, शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन को विशेष सत्संग, संक्रान्ति-दिन को पूजा और ३ घण्टों पर्यन्त महामृत्युंजय मन्त्र का जप तथा दिनांक २७ अगस्त को मासिक तीन घण्टों का महामन्त्र का संकीर्तन। विशेष गतिविधियाँह्हसाधना-सप्ताह की अवधि में 'दैनिक जीवन में साधना' विषयक प्रभात तथा सन्ध्या-समय दैनिक प्रवचन। (२) आराधना-दिन : प्रभातफेरी, ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना-ध्यान, पादुका-पूजा, एक प्रवचन, नारायण-सेवा, प्रसाद-सेवन। (३) दिनांक ११, १८ तथा २५ अगस्त को तीन निःशुल्क स्वास्थ्य कैम्प।

सुनाबेडा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्हदैनिक सत्संग-स्वाध्याय, प्रति गुरुवार और प्रति रविवार को पादुका-पूजा तथा स्वाध्याय के साथ सत्संग, आश्रम में निःशुल्क चिकित्सिकीय कैम्प। विशेष गतिविधियाँह्ह(१) श्री गुरु पूर्णिमा : सहस्र नामार्चना सहित पादुका-पूजा, ध्यान, हवन आदि। (२) गुरु-तत्त्व और गुरु-गीता के स्वाध्याय सहित साधना-सप्ताह के कार्यक्रम। (३) दिनांक २१ जुलाई को आदरणीय श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द जी का प्रवचन।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश) : दिनांक १२ तथा दिनांक २६ अगस्त को द्विसाप्ताहिक सत्संग और दिनांक १९ अगस्त को चल-सत्संग।

विजयवाडा (आन्ध्र प्रदेश): दिनांक ५ अगस्त को प्रवचन और स्वाध्याय सहित मासिक सत्संग।

विदेशी शाखाएँ

हांगकांग (चीन): जुलाई और अगस्त २००७ की माहावधियों में मासिक सत्संग दिनांक १४ जुलाई और ११ अगस्त (द्वितीय शनिवार को)। एक घण्टे के महामृत्युंजय मन्त्र जप के अनुसरण में गुरुदेव के Voice of Himalayas का अध्ययन, आरती, प्रसाद वितरण आदि (३५ से ३७ प्रतिभागी)। शेष शनिवारों को और जाहीर अवकाश के दिनों को, जुलाई माह में ७० भक्तों तथा माह अगस्त में ६४ भक्तों द्वारा महामृत्युंजय मन्त्र का जप।

श्री गुरु पूर्णिमा के कार्यक्रमह्ह्ह१ घण्टा जप, गुरु-पादुका-स्तोत्र, गुरु-भजन आदि। ५२६ तालीमार्थिओं को लाभान्वित करते हुए ३६ नूतन योगासन-वर्ग तथा माह जुलाई-अगस्त की अवधि में ८४ प्रतिभागियों सहित मासिक विशेष योग-वर्कशाप। दस सत्रों में योगासन की शिक्षा के तकनीक सिखाने का एक विशेष कोर्स जिसमें २१ योग-शिक्षकों की उपस्थिति। एक भगिनी-संस्था के योग-केन्द्र में हमारे योग-शिक्षक प्रेषित किये गये।

मलेशिया : (१) विशेष अवसरह्ह्हसाधना-सप्ताह और श्री गुरु पूर्णिमा को आराधना-दिनह्ह्हब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना, अखण्ड जप, भजन, पादुका-पूजन, मध्याह्न-भोजन और भजन-कीर्तन तथा आदरणीय श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी द्वारा प्रवचन सायंकाल में। आराधना-दिन को ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना, अखण्ड जप, भजन, पादुका-पूजा और मध्याह्न-भोजन तथा सायंकाल में नामावली, भजन, ध्यान, एक सुप्रसिद्ध सन्त द्वारा प्रवचन और समापन में रथ-यात्रा। साधना-सप्ताह में प्रसिद्ध वक्ताओं द्वारा ज्ञानदायक प्रवचन।

(२) प्रतिष्ठा-महोत्सवह्ह्हसुंगई कारंजन उप-शाखा में दिनांक ३० जून को पूज्य गुरुदेव की मूर्ति का प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव अति भव्यतापूर्ण हुआ, जिसमें सम्पन्न हुए हवन, अभिषेक, अष्टोत्तर अर्चना, प्रतिष्ठा-विधियाँ, पूजा, भजन में, समस्त मलेशिया में से २५० भक्तों तथा सन्तों की उपस्थिति।

(३) प्रतिष्ठा महोत्सव मण्डल पूजाह्ह्ह४८ दिवसीय प्रतिष्ठा महोत्सव में दिनांक १७ अगस्त को हवन, पूजा, सुशोभन सहित समापन, जिसमें आदरणीय स्वामी जी ने गुरु-पूजा की और ''दैनिक पूजा तथा गुरु-तत्त्व'' पर प्रवचन दिया। प्रतिष्ठा महोत्सव का वार्षिक दिनह्ह्हजोहोर बाहरू उपशाखा में स्थित गुरुदेव की मूर्ति का २० वाँ वार्षिक स्थापना-दिन दिनांक २ जून को मनाया गया और उसमें ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थनाएँ, हवन, गुरुदेव की मूर्ति का अभिषेक, जप, आदरणीय स्वामी जी द्वारा प्रवचन, पूजा तथा आरती, सबको प्रसाद-वितरण सम्पन्न हुए।

प्रणवानन्द जयन्तीह्ह्हदिनांक २८ अगस्त को परम पूज्य श्री स्वामी प्रणवानन्द जी के जन्मदिन पर अखण्ड नाम-कीर्तन, पादुका-पूजा और मध्याह्न-भोजन पूर्वाह्न में, प्रार्थना, भजन, आदरणीय स्वामी जी और अन्य वक्ताओं के प्रवचन आदि सायंकाल में। श्री कृष्ण जयन्तीह्ह्हप्रार्थना, भजन, वाद्यसंगीत, पूज्य स्वामी जी का प्रवचन, अभिषेक, श्री विष्णु सहस्रनामावली-अर्चना, मध्यरात्रि में आरती और प्रसाद वितरण।

विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रमह्ह्हलाहाट उपशाखा की प्रार्थना सभा : प्रार्थना, भजन, पादुका-पूजन और प्रवचन युक्त प्रार्थना सभा का नेतृत्व आदरणीय श्री स्वामी संयमानन्द जी द्वारा।

बंदार कंट्री होम्स उपशाखा में पादुका-पूजा : दिनांक २९ जुलाई को आदरणीय स्वामी श्री गुहभक्तानन्द जी द्वारा पावन पादुका लायी गयी और गुरुदेव के पावन समाधि मन्दिर में स्थानापन्न की गयी। पूज्य स्वामी जी ने 'पादुका-पूजन का महत्त्व' विषयक प्रवचन दिया। दिनांक २० अगस्त को पूज्य स्वामी जी द्वारा प्रथम पादुका-पूजा हुई। पुन: २ सितम्बर को विशेष पादुका-पूजा के पश्चात् आदरणीय स्वामी जी ने बालकों को सम्बोधित किया।

दिनांक ३० अगस्त को पेराई उपशाखा में आयोजित, प्रार्थना सभा में पादुका-पूजन, भजन-कीर्तन, आदरणीय

स्वामी जी द्वारा प्रवचन ''पादुका पूजा की महत्ता'' विषयक दिया गया। दिनांक १ सितम्बर को प्रार्थना सभा आयोजित हुई। प्रार्थना के पश्चात् भजन, श्री कौगसाबाई को श्रद्धांजलि देने के पश्चात् पूजा की गयी तथा प्रसाद-वितरण हुआ। दिनांक ३१ अगस्त को पूज्य स्वामी जी द्वारा ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना के परिचालन पश्चात् उन्होंने अन्तर्योग प्रार्थना और पूजा में उपस्थिति दे कर, 'आध्यात्मिकता और दिव्यता' पर प्रवचन दिया।

साधना शिविर और कैम्पह्हह्हबाटुकेब्ज में दिनांक १४ जुलाई को हठयोग के निदर्शन पश्चात् पूज्य स्वामी जी का प्रवचन हुआ। दिव्य जीवन संघ के युवा विभाग ने दिनांक अगस्त १७ से १९ पर्यन्त विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए तीन दिन का आध्यात्मिक कैम्प आयोजित किया, जिसमें तीन विश्वविद्यालयों के ४० छात्रों ने भाग लिया। दिनांक १८ अगस्त को सेनावांग उपशाखा में युवा कैम्प में १०० छात्रों ने भाग लिया।

समाज-सेवाह्हह्हदिनांक १० जून को, १५ जुलाई को और ११ अगस्त को शिवानन्द आश्रम, बाटुकेब्ज में ३० निर्धन परिवारों को मासिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते कोरे राशन के पैकेट्स बाँटे गये।

अन्य कार्यक्रमह्हह्ह(१) दिनांक २४ जून को, पोर्ट कलँग युवा विभाग ने आश्रम में, 'माता-पिता से मिलन-दिन' आयोजित किया जिसमें पादुका-पूजा, भजन प्रस्तुति, बालकों द्वारा नाटक अभिनय, युवानों द्वारा नाटक प्रस्तुति तथा आदरणीय श्री स्वामी संयमानन्द जी द्वारा प्रवचन आदि सम्पन्न हुए।

बंदार कंट्री होम्स उपशाखा ने दिनांक १४ जुलाई को, उनकी नूतन इमारत की निधि के लिए एक चैरिटी भोजन का आयोजन किया, जिसमें ५०० दाताओं तथा शुभचिन्तकों ने उपस्थिति दी।

पोर्ट कँग उपशाखा ने दिनांक २४ जुलाई को सांस्कृतिक कार्यक्रम और चैरिटी भोजन निधि-संग्रह के लिए आयोजित किये, जिसमें १०० शुभचिन्तकों ने उपस्थिति दी। सेरमबन् उपशाखा ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए एकोलेड उत्सव आयोजित किया।

सूचना

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल साधना शिविर

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल का वार्षिक साधना शिविर १९ जनवरी २००८ से २३ जनवरी २००८ तक मानव सेवा ट्रस्ट काम्प्लैक्स, हामिरागाच्छी, रेलवे स्टेशन मालिया, पश्चिम बंगाल में होगा।

पंजीकरण राशि ४५० रुपये प्रति व्यक्ति। नामांकन प्राप्त करने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर २००७।

नामांकन तथा अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

श्री सी. बी. सहगल, मो. नं. ०९८३०१ ४४१४७, श्री नितुल पारिख, मो. नं. ०९८३०० ४०७३०, श्री विजय स्वाँई, मो. नं. ०९३३९३ ९२८४५, श्री जगन्नाथ दे, मो. नं. ०९८३०२ ५७८१८, श्री निर्मलेन्दु मुखर्जी, मो. नं. ०९४३३५ ७३३१९।

सभी भक्तों से निवेदन है कि शिविर में भाग लें। **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

विशिष्ट उद्घोषणा

योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी का हीरक जयन्ती समारोह

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, डाकघरह्वशिवानन्दनगर (ऋषिकेश) में दिनांक २९ जून से ३ जुलाई २००८ के बीच योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी अपनी हीरक जयन्ती मनाने जा रही है। एकाडेमी के भूतपूर्व विद्यार्थियों एवं अस्थायी प्राध्यापकों को इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए हार्दिक निमन्त्रण है। हीरक जयन्ती की यादगार में एक स्मारिका का प्रकाशन प्रस्तावित है। एकाडेमी के अस्थायी प्राध्यापकों/स्वामियों से हमारा अनुरोध है कि वे आधारभूत योग-वेदान्त पाठ्यक्रम एवं उनके एकाडेमी में प्रवास, तत्सम्बन्धी उनकी पुरानी यादें, अनुभूति एवं विचारों पर आधारित अपने अमूल्य लेख भेजने की कृपा करें। विद्यार्थियों से भी अनुरोध है कि वे अपने प्रशिक्षण से सम्बन्धित उनके द्वारा ली गयी तस्वीरें जैसे भाषणों, कर्मयोग एवं योगासन, उत्सवों में भाग लेने सम्बन्धित, निःशुल्क नेत्र-यज्ञ, भोजनालय में सेवा, गुरुदेव कुटीर, गोवर्धन धाम के आस-पास, श्री दुर्गा मन्दिर एवं श्री दत्तात्रेय मन्दिर परिसर, सत्संग भवन आदि की, हो तो उसे रजिस्ट्रार, योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी के पास १५ मार्च २००८ तक भेज दें।

जो हीरक जयन्ती समारोह में भाग लेना चाहते हैं, वे निम्न पते पर सूचित करें :

महासचिव, दिव्य जीवन संघ, पत्रालय : शिवानन्दनगर,

जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन : २४९१९२

उसमें उनके आश्रम में रहने की प्रस्तावित तिथियाँ लिखें, ताकि आश्रम में उनके आवास की व्यवस्था की जा सके। यह सूचना ३० अप्रैल २००८ तक महासचिव को प्राप्त हो जाये।

विद्यार्थी अपने पत्राचार में अपना नाम, वर्तमान पता, फोन नम्बर, पाठ्यक्रम संख्या और उन महीनों के नाम लिखें जिसमें उन्होंने भाग लिया था।

एकाडेमी के सभी भूतपूर्व विद्यार्थी एवं प्राध्यापकों का हीरक जयन्ती समारोह में स्वागत है।

प्रेम और ॐ सहित

१९ नवम्बर २००७ **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**